॥ श्री वीतरागाय नमः ॥ पुष्प १६

श्री नवकार महामंत्र–कल्प

जिसमें

नवकारके प्राचीन मंत्रोंका संग्रह है



सम्पादक–प्रकाशक

चदनमलजी नागोरी

पोष्ट–छोटी सादडी (मेवाड)



प्रकाशक

चदनमल नागोरी जैनपुस्तकालय

पोष्ट–छोटी सादडी (मेवाड)

तीसरी आवृत्ति

संवत् १९९९ की ११॥ ई सन् १९४२

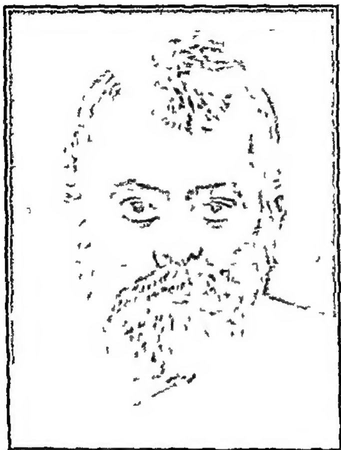
प्रकाशक :
जैन साहित्य सदन
पो. छोटी सादडी (मेवाड)

शुद्धिपत्र

पृष्ट	लाइन.	अशुद्ध	शुद्ध
१४	१४	विनयरीन	विनयहीन
१७	११	रो रहा है	हो रहा है
१८	१३	कर्मयाग	कर्मवोग
१९	१७	हैं	हैं
२२	३	हं	हैं
३०	१०	नौदका	नौदफा
३१	४	तर्जनोके नीचेका,	चोथा मध्यमाके नीचे पाचवां अनामिकाके नीचे
४८	१६	मावे	पावे
७५	३	इक्कीस	इक्कीस
७७	५	पीता	पीडा
७८	८	पीडा	षोडशा
७९	४	जाप	जाय
९०	१३	पाथवी	पार्थिवी

मुद्रक :
शाह मणीलाल छगनलाल
नवप्रभात प्रीन्टींग प्रेस
घीकांटारोड अहमदाबाद.

सद्गत आचार्यवर्य श्री विजयनीतिसूरिजी महाराज



अति कृपाकी यादगार में
यह पुष्पाञ्जली
सेवा में स्वीकार करियेगा

[illegible]

श्रीमान् कल्याणदास नारायणदास ट्रस्ट फंड.

इस फंडमेंसे विशेष करके सिधाते क्षेत्रमें प्रतिवर्षकी आवकमेंसे खर्चा किया जाता है ईस वष ज्ञान खाते खर्च करनेका इरादा श्रीयुत् भाइचदभाई मोतीचद भादोल वालोंकी प्रेरणासे हुवा इस समय इस ट्रस्टके ट्रस्टी साहब

(१) श्री भाइचदभाई मोतीचद भादोल्वाले

(२) ,, रमणलाल देवचद ओल्पाडवाले

(३) ,, गमनलाल रुपचद ओल्पाडवाले

(४) ,, चीमनलाल खुबचद सूरतवाले

हैं, मेम्बरोंकी सभामें भाइचदभाईकी खास प्रेरणासे यह प्रस्ताव रखा गया कि श्री नवकार महामत्र कल्पकी तीसरी आवृत्ति प्रकाशित होती है उसमें सहायता देकर काफी तायदादमें नकलें पुज्यपाद मुनिमहाराज ज्ञानभंडार आदिकी सेवामें भेट दी जाय। भाईचदभाई धर्मिष्ठ प्रवृत्ति वाले तपस्वी वयोवृद्ध और सज्जन आत्मा है इनके प्रति ट्रस्टीयोंको भी मान है अत दरख्वास्त मजूर की गई। इस लिये चारों ट्रस्टी साहबोंको धन्यवाद है, खास कर भाईचदभाई जिन्होंने ऋषिमडल स्तोत्र–भावार्थ नामकी पुस्तक पढ कर परिचय बढाया और इसका ध्यान करनेके अभ्यासी होकर छे महिनेसे आय बिलकी तपस्या कर ध्यान कर रहे हैं व ध्यानमें गति बढा रहे हैं इस लिए इनकी यह क्रिया प्रशसनिय व धन्यवादके पात्र है। इनको इस ध्यानके प्रभावसे शाति प्रदान हो यही आंतरेच्छा है।

इस पुस्तक के प्रकाशनका श्रेय उस अमर आत्माको है कि जिनकी कमाइसे यह टरस्ट बना है और अमर नाम कर गए हैं अस्तु।

ली

प्रकाशक.

किञ्चित् वक्तव्य

पाठकोंके सामने श्रीनवकार महामन्त्र कल्पकी तीसरी आवृत्ति रखते हुवे हर्ष होता है। जैन समाजने प्राचीन ग्रथका संग्रह जिस प्रकार किया था उतने प्रमाणमें रक्षा नही हो सकी जिससे वहुतसा साहित्य लोप हो गया है। फिर भी जो कुछ वचा है वह कम नही है, इस समय जो प्राचीन भण्डार देखनेमें आते हैं उनको अब भी रक्षित रखे जांय तो जैन समाजका गौरव है। यह नवकार महामत्र कल्प हमें एक भण्डारमेंसे प्राप्त हुवा था जिसका वृत्तान्त प्रथम प्रकाशनमें दिया गया है, इस कल्प पर स्वाभाविक ही प्रेम होनेसे सम्वत् १९९० के कार्तिकी पूनमको प्रथम आवृतिका प्रकाशन हुवा और इतनी जल्दी पुस्तकें खतम हो गई कि दूसरी आवृत्तिका प्रकाशन १९९१ वैशाख सुदी १ अर्थात् साडे पांच महिने वाद ही कराना पडा इन प्रकाशनमें हमारा नया साहसथा और कुछ जल्दीभी थी इस लिए अशुद्धियां रहजाना संभव था। प्रथम आवृत्ति शेठ कुवरजीभाई आनन्दजी भावनगरवालोंकी सेवामे भेजी गई और आपने जहां जहां अशुद्धियां देखी सुधार कर कापी वापस भेजी लेकिन उसके आनेसे पेशतर दूसरी आवृत्तिका प्रकाशन हो चुका था इस लिए अशुद्धियां नही सुधार सके। लेकिन जब जब पुस्तक हाथमें आती थी शेठ कुंवरजीभाईकी याद आ जाती और अब तक वे अशुद्धियां अखरती रही, दरम्यानमें ऋषिमंडल स्तोत्र भावार्थ—नामकी पुस्तक के प्रकाशनमें लग जानेसे व और भी अनिवार्य संजोगसे प्रकाशन नही हो सका। इस तीसरी आवृत्तिमें शेठ कुंवरजीभाईकी आज्ञाके मुवाफिक सुधार किया गया हैं, फिर भी सम्भव है अशुद्धियां रह गई हों तो पाठक सुधार कर पढें। इस विषयमें कुंवरजीभाईके हम अत्यंत आभारी हैं।

तरीकेके मुवाफिक पहली व दूसरी आवृत्तिकी प्रस्तावना इस आवृत्तिमें छपवाना चाहिए था लेकिन कागज की बचत करनेके लिए प्रस्तावना नही छपाई, दूसरी आवृत्तिमें (१) नवकार मत्रका छद (१) नवकार छद, (२) वृद्ध नवकार छपवाया था, लेकिन यह और पुस्तकोंमें भी छप चुके हैं इस लिए इस आवृत्तिमें नही छपवाए हैं ।

चित्र पहली व दूसरी आवृत्तिमें छपवाए थे उतनेही इसमें हैं, षट्कोण यत्र, कमलपत्तका यत्र समोसरण पर ध्यान और आसनके अलग अलग चित्र लगभग पन्द्रहएक और दाखिल करनेका इरादा था लेकिन महंगाई और कागजोंकी कम मिलनतसे यह भावना स्थगितसी गई है । यह चित्र प्रगट हो जाते तो ध्यान करनेमें हरएकको सहायता मिलती । (६) अक्षरके पाच विभाग वाली योजनासे यह बताना था कि इन पाच नम्बरोंके चिन्हसे कोनसे नम्बरों द्वारा कोनसा अक्षर बनता है, लेकिन इसमे पृष्ठ सख्या बढ जानेसे इस आवृत्तिमें दाखिल नही की है, और सिर्फ (६) के विभागका चित्र दे दिया है जो पहली-दूसरी आवृत्तिमें नही था ।

इस पुस्तकमें सब सामग्री दूसरे ग्रन्थोंसे ली हुई है इसमें मेरा तो सिर्फ एकत्र करनेका प्रयत्न मात्र है अत इस विषयका सारा श्रेय उन ग्रन्थकारों व प्रकाशकोंको है कि जिनके नाम अन्यत्र प्रगट किये गये है ।

मु अहमदाबाद
वैशाख शुक्ला १५ गुरुवार
सवत् १९९८
ता. ३० अप्रेल १९४२ की

भवदीय
चदनमल नागोरी
छोटी सादडी (मेवाड)

पर्याप्त पुस्तकें

१ ऋषिमंडल स्तोत्र-भावार्थ विधि-विधान आम्ना सहित साथमें २३ इंचका यन्त्रभी है तीन रंगके चित्रोवाला की. १।।
२ केसरियाजी तीर्थका इतिहास सचित्र जिसमें पट्टे परवाने शिलालेख आदिसे सिद्ध किया गया है कि तीर्थश्वेताम्बर है. ०।।।
३ वत्रवर्णसिद्धि जिसमें १०० पाठ सूत्रोके देकर भावार्थ किया है. ०।।
४ जेसलमेरमें चमत्कार ऐतिहासिक पांच कथाए है. =)
५ चतुररंभा और कामीभरतार अध्यात्मिक एक वार्ता है =)
६ दुर्वौषधिदुख इसको पढनेसे आत्माकी स्थिति मालूम होगा =)
७ जातिगगा-ज्ञातिकी उपयोगिता सिद्ध की गई है =)
८ मेवाडके नवयुवको प्रति संदेश =)
९ चैत्यवन्दण रहस्य जिसमें २४ द्वार दशत्रिकके ३० भेद २०७४ भेदानुभेद आदिका वर्णन है. बाल युवक वृद्धको समान उपयोगी है. पाठशालामें चलाने योग्य है ≠)

प्रकाशिक होनेवाली पुस्तकें

१ लोगस्सकल्प अति उत्तम और देखने योग्य है की. ।।।)
२ स्नात्रपूजा अर्थ सहित इसको पढने बाद पूजामें अपूर्व आनंद आवेगा घरघरमें रखने लायक है की. ।)
३ गृहस्थधर्म यह तो प्राचीन ग्रंथ हैं श्री कलिकालसर्वज्ञ हेमचन्द्र-सूरिजी महाराज रचित्त है, बाल, युवा, वृद्ध सबके लिए एकसा उपयोगी है पढनेसे उत्तमता मालूम होगा की. ०।।।
४ यंत्रनिधि जिसमें विजय पताका, वर्धमान पताका, जय पताका आदि बहुतसे यन्त्रविधि विधान आमना सहित दरज होंगे. की १।।)

पोष्ट खर्च अलग हैं।

प्राप्तिस्थान

सद्‌गुण प्रसारक मित्रमंडल

पो. छोटी सादडी (मेवाड)

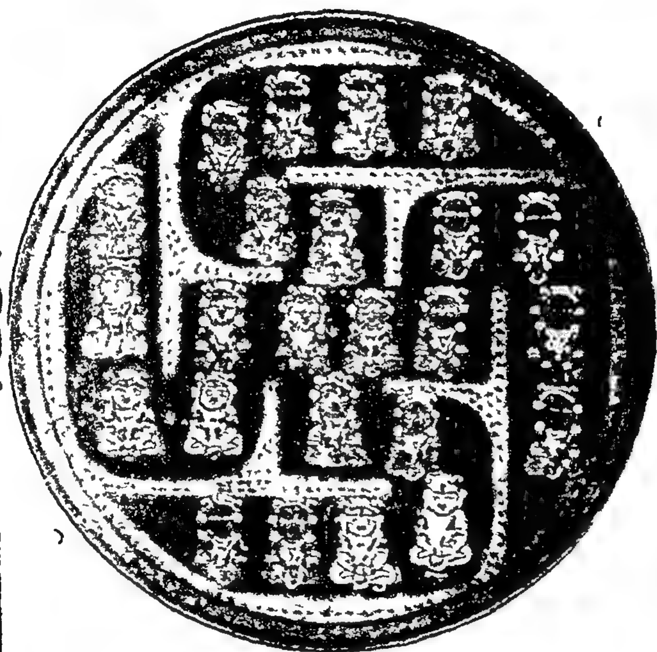
अनुक्रमणिका

आभार

प्रकाशनमें जिन पुस्तकोंसे सहारा लिया गया है उनके कर्ता व प्रकाशकको धन्यवाद देते हुवे नामावली प्रगट करते हैं।

१ आवश्यक सूत्र
२ भगवती सूत्र
३ महानिशीथ सूत्र
४ श्रमण सूत्र
५ कल्प सूत्र
६ व्यवहार भाष्य
७ चन्द्रप्रज्ञप्ति
८ षट् पुरुष चरित्र
९ प्रतिष्ठा कल्प पद्धति
१० श्रीनवकार कल्प
११ योगशास्त्र
१२ आचार दिनकर
१३ धर्म बिंदु
१४ श्राद्धविधि
१५ प्रियंकर चरित्र
१६ योग विंशिका
१७ गौतम रास
१८ जैन तत्त्वादर्श
१९ पंच प्रतिक्रमण
२० चौदह पूर्वाधिकार
२१ श्रीपाल रास
२२ नवस्मरण
२३ अध्यात्म कल्पद्रुम
२४ विवेक विलास

स्वस्तिकमें चोवीस जिन स्थापना



पृष्ठ–१

KRISHNA P RATANPOLE AHMEDABAD

॥ ॐ नम सिद्धेभ्य ॥

श्री नवकार महामंत्र-कल्प



मत्रमहिमा प्रकरण

उपरोक्त मत्र-नवकार मत्रके नामसे जैनशासनमें प्रसिद्ध है, इसकी महिमा पारावार है, और जैन धर्ममें जितनी भी क्रिया व्रत नियम सयम ध्यान समाधी बताई गई है उन सबमें इस मत्रकी जरुरत होती है स्मरण जप ध्यान करनेके लिए मत्र, स्तोत्र, और स्तवन यह तीन बातें प्रसिद्ध हैं। मत्रका नाम जिस जगह आता है ध्याता पुरुष समझता है कि इसमें चमत्कार जरुर है, मत्रमें अक्षर थोडे होते है लेकिन प्रणवाक्षर मायाबीज आदि सहित जिनमें यथाक्रमानुसार योजना होती है और उस मत्रके अधिष्ठाता देव होते हैं वही स्मरण करनेवालेकी भावनाको पुरी करते है। मनुष्यको निजकी भावनाऐं पूर्ण करनेमें एक देवकी सहायता मिल जाती है इसी लिए मनुष्य मत्र द्वारा अपनी कार्य सिद्धिके लिए

सहायक ढूंढता है, मंत्रसे यथाविधि जाप करनेपर अधिष्ठायक देव आकर्षक होते हैं, इसी लिए मंत्रका नाम सुनतेही चमत्कार दीखता है और मनुष्य आराधना करता है।

स्तोत्र पाठमें महिमाका वर्णन होता है जिससे देवकी शक्ति कला प्रतिभा जाननेमें आती है और इतना जाननेसे देवके प्रति प्रेमभाव पुज्यभाव होता है देवकी शक्तिका मूर्त्तिमंत दृष्टान्त सामने खडा हो जाता है और वारवार यथाविधि स्तोत्र पाठ करनेसे स्तुतिके कारण देव प्रसन्न होते हैं, इसी लिए स्तोत्रका पाठ मनुष्य वहुत चावसे करता है।

स्तवना में गुणानुवाद आता है जिसके कारण स्तवना करने वालेकी आत्मा पर गुणका असर होता है और आत्मा इस तरहके गुणानुवाद करते करते गुणी बन जाता है इसी लिए मानवी स्तवन-भावना बहुतही प्रेमके साथ लयलीन हो करता रहता है।

उपरके तीनों विधान जैन समाजमें प्रचलित हैं और वहुधा वालपनसेही इसका अभ्यास जारी हो जाता है। यहां मंत्र विधानका सम्वन्ध है, इस लिए

यह देखना है कि जिस तरह अनेक प्रकारके मंत्र होते है, उनके अधिष्ठाता है उनही मत्रोंमेंसे यह भी एक नवकार मत्र है या कुछ और बात है? सोचते है तो यह मत्र साधारण नही है, और अनेक मत्रोंके जो अधिष्ठाता देव है वह भी अपनी आत्माके लिए इस नवकार महामत्रका जाप करते हैं इस लिए उन मत्रोंसे तो यह मत्र कइ दरजे उच्चकोटिवाला है, इसकी महिमा कहनेके लिए देवभी समर्थ नही हो सकते तो मानवी किस तरह बयान कर सकता है जैनसिद्धान्तमें तो कहा है कि।

जिणसासणस्स सारो, चउद्दसपुव्वाण जो समुद्धारो॥
जस्स मणे नवकारो, ससारो तस्स किं कुणइ॥१॥
एसो मगलनिलओ, भयविलओ सयलसघसुहजणओ॥
नवकारपरममतो, चितियमित सुह देई॥२॥

भावार्थ–जैन शासनमें चवदापूर्वका सारभूत नवकारमत्र बताया है, और इसका बहुतसा वर्णन दशवें पूर्वमें था जिसका गणधर भगवानने बयान किया, ऐसे इस महा प्रभाविक मत्रका जो नित्यप्रति ध्यान–स्मरण करते है उनका इस ससारमें कोई भी अनिष्ट चिन्तवन नही कर सकता। यह मंत्र महामग–

स्मरण अवश्य करना चाहिए यह मंत्र मनोवाञ्छित फलके देने वाला है।

इस महामंत्रका आदि करता कोई नही है, यह तो अनादी है। आगे कई चोविसियां हो चुकी और अब भविष्यमें होंगी लेकिन यह मंत्र इसी रुपमें था और रहेगा।

इस महामंत्रके लिए इस प्रकरणमें मंगलरुप चवदापूर्वका सार, दशवेंपूर्वसे उद्धरित चिंतामणी-रत्नके समान जिसके एक अक्षरके जापसे भी अपूर्व लाभ विशेष संख्याके जापसे मोक्ष सुखका मिलना, और अनेक प्रकारके कष्टका क्षय होना व किस जगह किस समय स्मरण करनेका संक्षिप्त बयान मूल सूत्रोंके पाठ सहित बताया गया जिससे यह प्रतीति होजाती है कि यह मंत्र अपूर्व है। हर एक मंत्रके मानने म चार प्रतीति–यर्थात् साक्षी हो तो उस पर विश्वास जम जाता है। (१) एक तो शास्त्रकी साक्षी, (२) दूसरे गुरु महाराअ या शास्त्रवेत्ता–कर्त्ता पर श्रद्धा, (३) तीसरे वृद्ध जन आदिकी परम्परागत साक्षी, और (४) चोथे निजका आत्मविश्वास, यह चारोंही

श्रीनवपद मंडल



पृष्ठ–७

Krisana Printery, Ratanpole, Ahmedabad,

बातें इस प्रकरण में मोजूद है, इस लिये यह मत्र जैन धर्मानुयायीयों के लिए सर्वमान्य महामङ्गलकारी है। और दूसरे जो अनेक जातिके मत्र हैं जिनका अधिष्ठाता एक देव होता है, लेकिन इस मत्रके अधिष्ठाता नही देव तो सेवक रूपमें काम करते हैं और जो पुरुष इसका ध्यान करता है उसकी मनोकामना देव पुरी करते है अस्तु।

नवपद प्रकरण

श्री नवकार महामत्रके नव पद हैं, इनकी स्थापनासे सिद्धचक्र बनता है। श्रीपालजी महाराजने इनही नवपदकी आराधनाकी थी जिससे कोड (कुष्ट) रोग चला गया था, सुदर्शन सेठका मरणान्त कष्ट निवारण करनेमें व शूली की जगह सिंहासन बनानेमें यही मत्र सहायक था। कचे सूतसे बधी हुई चालणीसे कुवेमें से पानी निकालनेमें इसी मत्रका चमत्कार था। चम्पानगरीके दरवाजे खोलनेमें भी इसी मत्रका प्रभाव था इस तरहसे इस मत्रकी महिमाका वर्णन शास्त्रोंमें कई प्रकारसे पूर्वाचार्योंने किया है और नवपद आराधनमे यहा तक बताया है कि,—

सिद्धाः सिद्धयन्ति सेत्स्यन्ति ये जीवा भुवनत्रये ॥
सर्वेऽपि ते नवपदाराधनेनैव निश्चितम् ॥१२०॥

श्रीपाल चरित्र

भावार्थ-श्रीपालजी महाराजके चरित्रमें तो यहां तक बयान किया है कि जो सिद्धावस्था तक पहुंच चुके हैं और जो जीव अब सिद्ध होंगे उन सबके लिये किसी न किसी रुपमें नवपद आराधन मुख्य समझना चाहिए।

आवश्यक सूत्रकी निर्युक्तिमें नवकार स्मरण करनेकी परिपाटी यूं बताई गई है।

अरिहंताणं नमोक्कारो; सव्वपावप्पणासणो ॥
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥१॥
सिद्धाणं नमोक्कारो. सव्वपावप्पणासणो ॥
मंगलाणं च सव्वेसिं, बीयं हवइ मंगलं ॥२॥
आयरियाणं नमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो ॥
मंगलाणं च सव्वेसिं, तइयं हवइ मंगलं ॥३॥
उवज्झायाणं नमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो ॥
मंगलाणं च सव्वेसिं, चोत्थं हवइ मंगलं ॥४॥
साहूणं नमोक्कारो. सव्वपावप्पणासणो ॥
मंगलाणं च सव्वेसिं, पञ्चमं हवइ मंगलं ॥५॥
एसो पंच नमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो ॥
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥६॥

उपरोक्तमत्रका विधान आवश्यक सूत्रकी निर्युक्तिके ध्यानशतकमें प्रतिपादित है सो आदरणीय है भवभीरु महानुभावोको जिज्ञासु होकर जानना चाहिए। इस मत्रका वर्णन करते "महानिशीय-सूत्रमें" कहा है कि–

नासेइ चोर-सावय, विसहर जलजलण बधण भयाइ ॥
चिंतिज्जतो रक्खसरणरायभयाइ भावेण ॥

भावार्थ–चोर, सिंह, सर्प, पानी, अग्नि, बधनका भय, राक्षस, सग्राम, राजभय आदि उपस्थित हुवे हों तो पञ्च परमेष्ठिमत्रके जापसे और ध्यानसे तमाम प्रकारके भय नष्ट हो जाते हैं। इसी सूत्रमें नवकारमत्र गिननेकी परिपाटी एक और तरहसे भी बताई है।

अरिहन्ता मुज्झ मङ्गल, अरिहन्ता मुज्झ देवय ॥
अरिहन्ते ति कित्तइस्सामि, वोसिरामित्ति पावग ॥१॥
सिद्धा मुज्झ मङ्गल, सिद्धा मुज्झ देवय ॥
सिद्धे ति कित्तइस्सामि, वोसिरामित्ति पावगं ॥२॥
आयरिया मुज्झ मङ्गल, आयरिया मुज्झ देवय ॥
आयरियत्ति कित्तइस्सामि, वोसिरामित्ति पावग ॥३॥
उवज्झाया मुज्झ मङ्गल उवज्झाया मुज्झ देवय ॥
उवज्झायाति कित्तइस्सामि, वोसिरामित्ति पावग ॥४॥

एसो पञ्च मुञ्ज मङ्गलं, एसो पञ्च मुञ्ज देवयं ॥
एसो पञ्चित्ति कित्तइस्सामि, वोसिरामित्ति पावगं ॥५॥

इसके अतिरिक्त चन्द्रपन्नत्तिमें प्रथम गाथा मङ्गलाचरण रूप इस तरह प्रतिपादित है, जिसको भी प्राचीन नवकार ही कहते हैं।

नमिऊण असुरसुरगरुलभुयगपरिवन्दियं ॥
गय किलेस अरिहेसिद्धा आयरियउवज्झायसव्वसाहू य १

इसी तरह और सूत्रोंमें भी बयान आता है, जिज्ञासुओंको जाननेकी कोशीस करना चाहिए। और इस महामंत्र पर सम्पूर्ण श्रद्धा रखना चाहिए इस प्रकरणमें प्राचीन शास्त्रोंकी साक्षी और परम्परागत व आत्मविश्वासका थोडासा बयान आ गया है जो आदरणीय है।

अशुद्धोचार प्रकरण

धर्मसूत्र-सिद्धान्त मंत्र-स्तोत्र-स्मरण तो वे ही इस समय हैं कि जो प्राचीन कालमें थे। और जिनके प्रभावसे महान् कार्य सिद्ध होने के उदाहरण मिलते हैं। जबके मंत्र स्तोत्र जाप स्मरण वे ही हैं, और उनके अधिष्ठाता देव भी विद्यमान हैं तो इस समयमें

आराधक पुरुषको प्रत्यक्ष क्यों नही दीखते? और प्रत्यक्ष नही आते हैं इसी लिए उपासकोंकी श्रद्धा कम होती जाती है। बात मानने योग्य भी है, क्यों कि मत्र बदले नही अधिष्ठाता बदले नही तो फिर प्रत्यक्ष दर्शनमें कोनसी खामी है? विचार करते हैं तो सारी बातें वही है कि जो पूर्वकालमें थी, लेकिन स्मरण करने वाले वह नही हैं कि जो पूर्वकालमें थे। न उनकी सी धैर्यता-श्रद्धा और योग्यता है। हमारी अयोग्यताका विचार करें तो बहुत लम्बा है। लेकिन मत्रोचारकी तरफ देखें तो यथाविधि उचार हम नही कर सकते। पूर्वाचार्योंने तो योजना करनेमें और हर तरहकी तरकीब बतानेमें कमी नही की और हमने धृष्टता करनेमें कमी नही की सो कमी नही करनेमें तो दोनों बराबर हैं, लेकिन उनका ध्येय कुछ और था और हमारे विचार कुछ और ही प्रकारके हैं। पूर्वाचार्योंने स्पष्ट उचारके लिये भांति भांतिके कथन प्रतिपादित किये और सूत्र पाठ आदिमें पद, सम्पदा, गुरु, लघु आदिकी व्यवस्था की है जैसे नवकारमत्रमें पदसंख्या ॥९॥ सम्पदा ॥८॥ गुरुवर्ण ॥७॥ लघुवर्ण ॥६१॥ सर्ववर्ण ॥६८॥ इस

प्रकारसे भिन्न भिन्न बताया है, और बतानेका हेतु स्पष्ट है कि इसकी आराधना करनेवाला गुरु अक्षर, लघु अक्षर, संयुक्ताक्षर, पदच्छेद, आदिसे क्रमसर ध्यान स्मरण करे तो मंत्रकी शक्ति प्रगट होती है, और शुद्धता पूर्वक बोलनेसे तत्काल सिद्धि होती है यही पूर्वाचार्योंकी भावनाऐं होना चाहिए। आज समाजमें देखिए तो इस प्रकारसे शुद्ध बोलने वाले बहुत कम नजर आवेंगे तो फिर सिद्धिकी आशा किस प्रकार की जावे। हरएक सूत्र, मंत्र, स्तोत्रका अर्थ समझे विना महत्त्वता जाननेमें नही आती और महत्त्वता जाननेमें आ जाती है तो मनोभाव भी एक तानमें लयलीन हो जाते हैं। शुद्ध बोलनेमें कइ प्रकारकी सिद्धियां समाई हुई हैं। जो मनुष्य इसके आनन्दको पा चुका है वही इसके महत्त्वको भी समझ सकता है, और जो मनुष्य अशुद्ध बोलनेके आदी हैं वह शुद्ध बोलने जांय तो भूल जाते हैं या थोडी देरके उच्चारण बाद ही फिर उसी लाइन पर आ जाते हैं ऐसे पुरुषोंको समझानेके लिए, बोलनेमें जो आठ प्रकारके दोषका त्याग करना बताया है जिनका कुछ वर्णन इस प्रकार है।

(१) प्रथम व्याविद्धत्व दोष, अर्थात् मनङ्ग समझे बिन बोलना, बात कुछ और ही चल रही हो और आप अपनी कहानी और ही कहते जाते हों इस तरहकी आदत जिनकी हो उन्हे छोडनेका प्रयत्न करना चाहिए।

(२) दूसरा व्यग्याम्रेडित्व दोष, इसका यह मतलब है कि एक आदमी बात कर रहा हो और बीचमें आप अपनी जमाते जाते हों, याने एक साथ ही एक आगारो आल्लाप जो बोल्ते हैं उनमें से एक की भी बात समझमें नहीं आती और परिश्रम वृथा चला जाता है और सुनने वाला भी घृणा करता है अतः ऐसी आदत जिन पुरुषोंकी हो उन्हें चाहिए कि त्याग कर देवें।

(३) तीसरा हीनाक्षर दोष, पदमें, शब्दमें कम अक्षर बोलना लिखनेमें कम लिखना जिससे अर्थका अनर्थ हो जाता है, मतलब चला जाता है और सुननेवाला समझ नहीं सकता जिन महानुभावोंको छोटे अक्षरोंमें बोलनेका काम पडता हो वह इस सूत्रसे अच्छी प्रकार करेंगे और जिनकी आदत

अक्षर खानेकी है उनका पेट तो अक्षर खाये विना भरेगा नही, नित्य खाली होगा और नित्य खावेंगे अतः ऐसी आदत हो तो त्याग करना चाहिए।

(४) चोथा अति अक्षर दोष, यह दोष तीसरे नम्बरके दोषसे मिलता हुवा है, जो वोलनेमें लिखनेमें शब्द पदको विगाड कर ज्यादे अक्षरका उपयोग करते हैं उनको चाहिए कि ऐसे दोषका त्याग कर देवे।

(५) पांचवें पदहीन दोष, वोलते समय पदको गाथा को भूल जाना या जल्दीके मारे जान बूझ कर कम वोलना और क्या वोलते हैं यह न तो खुद समझते हैं न दूसरा समझ पाता है अतः यह दोष हानि-कर्ता है, ऐसी आदत हो तो छोड देना चाहिए।

(६) छठ्ठा विनयहीन दोष, सूत्र, मंत्र, स्तोत्र आदिके वोलते समय विनयकी आवश्यकता है, कोनसा सूत्र-मंत्र किस मुद्रासे बोलना और किस प्रकार नम्रताका भाव रखना यह सब सीख लेना चाहिए जिन पुरुषोंमें यह अवगुण विनयहीनताका हो उन्हें चाहिए कि त्याग कर देवे।

(७) सातवा उदात्तादि दोप, जिसके तीन भेद होते हैं एकतो उदात्त, दूसरा अनुदात्त, और तीसरा स्वरित, इनमेंसे उदात्तका यह मतलब हैं कि खूब उचे स्वरसे चिल्लाते हुवे गला निकाल कर बोलना जिससे अक्षर गुरु है या लघु इसका भान नही रहता और अपनी धुनमें वोलता ही जाय। दूसरे अनुदात उसको कहते हैं कि बहुत मद स्वरसे इतना धीरे बोले कि जिससे न तो आप समझे और न सुनने वाला समझ सके। यह दोप भी त्याग करने योग्य है। तीसरा स्वरित दोप का यह मतलब है कि सम-रीतसे बोलता जाय वहुत उचे स्वरसे भी नही और मद स्वरसे भी नही सामान्य रीतसे इस तरहसे वोले कि जिससे गुरु, लघु सयुक्ताक्षरका भान ही नही रह सके, ऐसी आदत हो तो यह भी त्याग करने योग्य है।

(८) आठवें योग हीनदोप, अक्षर–स्वर व्यञ्जन ह्रस्व दीर्घका मिलान किए बिना बोलता जाय और मिलान हो उसे तोड कर बोलता जाय, पदच्छेद, सन्धि आदिका खयाल नही रखे तो भावार्थ विगड

जाता है अतः मंत्र स्तोत्रके पाठकों को स्वरुप विगाड कर नही बोलना, इस तरह विगाड कर बोलनेकी आदत हो तो त्याग कर देवें।

उपरोक्त कथनानुसार आठों दोष त्याग करने के योग्य है, और सूत्र, मंत्र, स्तोत्रका उच्चार करते समय समझते हुवे मर्यादा सहित पद्धतिसर बोलना चाहिए इन आठों दोषों के लिए अलग अलग दृष्टान्त भी हैं लेकिन इस विषयको बढाना असंगत है, श्रमण सूत्रमें बयान आता है कि,—

हीणक्खरं अच्चक्खरं पयहीणं।
विनयहीणं घोसहीणं जोगहीणं॥

भावार्थ---अक्षर हीन हो, गाथा बोलते समय कम या ज्यादा बोली जाय पदच्छेद रहित उच्चार करते हों मिलान किए विना विना सम्बन्धके बोलते हों, योगवहन किए विना याने अनाधिकारी होते हुवे उच्चार किया जाय तो अनुचित है। इस लिए मंत्र यंत्र तंत्र करनेसे पहले अधिकारी बनना चाहिए, जिन्होंने अधिकार प्राप्त नही किया है और ऐसे कार्योंमें प्रवेश करते हैं उन पुरुषोंको सिद्धि प्राप्त

नही हो सकती। लेकिन आजके वरतमें अपनी अयोग्यताको तो देखते नही और मत्रकी व मनके अधिष्ठाता देवकी शक्तिको हीन मानते हैं। पुरुषार्थ अपना नही ब्रह्मचर्यादि गुण नही धैर्यता व सतोष नही तप जप चारित्रकी शुद्धि नही और कहेंगे मत्रोका अश जाता रहा।

महानिशीथ सूत्रमें तो स्पष्ट बयान किया है कि श्रावक श्राविका उपधानके किए बिना नवकारमत्रका उच्चार करे तो निषेध है। विषय बहुत लम्बा है, यहा इस चर्चाको बढाना असगत है, लेकिन वर्तमानमें इस निर्देश मर्यादाका कितना उल्लघन हो रहा है सो सब जानते हैं। जबके नवकार मत्रका उच्चार करनेका अधिकारभी हमने आज्ञाके मुताबिक प्राप्त नही किया है तो मत्र साधन मनोच्चारकी तो बात ही बडी है, समझ सकते हैं कि खुद अधिकारी बने नही और कहेंगे देवोंका अश जाता रहा।

शास्त्रोंमें बताये अनुसार अधिकार प्राप्त करनेके बाद भी हर एक धर्मक्रिया करते समय पाच प्रणिधानका ध्यान रखना चाहिए, जिसका विवेचन

"योगविंशिका"में श्रीमान् हरिभद्रसूरिजी महाराजने प्रतिपादित किया है, और न्याय विशारद न्यायाचार्य श्री यशोविजयजी महाराजने "योगविंशिका" की टीकामें इस विषयको स्पष्ट करते हुवे फरमाया है कि, पांच आशय रहित जो धर्मक्रियायें होती हैं वह असार हैं, क्योंकि धार्मिक क्रियायें योगरुप होनेके कारण (१) प्रणिधान, (२) प्रवृत्ति, (३) विघ्नजय, (४) सिद्धि, और (५) विनियोग इन पांच आशयसे अलंकृत होना चाहिए, और ऐसे परिशुद्ध योगके पांच प्रकार बताए गए हैं। (१) उर्ण, (२) वर्ण, (३) अर्थ, (४) आलम्बन, और (५) अनालम्बन इस प्रकार पांच भेद हैं, इन भेदोंमेंसे उर्ण और वर्ण यह दोनों तो कर्म याग हैं, और अर्थ, आलम्बन, अनालम्बन यह तीनों ज्ञानयोग हैं। इन स्थानादि पञ्च-योगोंका तात्त्विक दृष्टिसे विचार किया जाय तो प्रत्येकके (१) इच्छा, (२) प्रवृत्ति, (३) स्थिरता, और (४) सिद्धि इस प्रकार चार चार भेद होते हैं, और इनके चार चार अवान्तर भेद बताये हैं (१) प्रीति अनुष्ठान, (२) भक्ति अनुष्ठान, (३) वचन अनुष्ठान, और (४) असंग अनुष्ठान इस तरहके चार

चार अवान्तर भेदको फैलाते हैं तो कुल सख्या ८० होती है। जिनके स्वरूपको समझ कर क्रिया की जाय तो अवश्य फलदाई होगी। जो पुरुष स्वरूप समझें नही योग्यता प्राप्त करें नही और स्वच्छन्दी बन कर साधना करें उन्हें सिद्धि किस प्रकार हो सकती है। अत' शुद्धोचारकी तरफ बहुत लक्ष देना चाहिए और जो क्रियायें-साधनायें की जाय उनमें गुरुगम अवश्य लेना चाहिए।

नवाङ्क प्रकरण

नवकार, नवपद, नवतत्त्व आदि जिनका ९ के अङ्कसे उच्चार होता है उनमें अनेकानेक शुभ सिद्धिया समाई हुई होती है। नवाङ्कमें अक्षय सिद्धि है, अर्थात् इस अङ्ककी सिद्धि खण्डित नही होती अखण्ड रूप रहती है, क्योंकि अङ्कमें यह चैतन्यरूप है इसके उदाहरणको देखिये कि, व्यञ्जन क, ख, ग, घ, ङ, इत्यादि जो बतीस अक्षर है यह सब जड सहप्य माने गए हैं, और जड पदार्थ जितने हैं वह प्रायः क्षय हो जाते हैं। इन व्यञ्जनके साथ अ, आ, इ, ई, आदि सोलह स्वर जो चैतन्य सहप्य हैं, इनको लगाए

जांय तो व्यञ्जनकी शोभा होती है, और स्वराअक्षर चैतन्य रुप होनेसे खण्डित नही होते और अपने रुपमें अक्षय रहते हैं, इस सिद्धान्तकी सत्यताका यह प्रमाण है कि क, च, ट, त, प, वर्गादिका उच्चार करते हैं तो व्यञ्जनका शीघ्र ही नाश हो जाता है और तत्काल स्वरका उच्चारण होने लगता है। अतः सिद्ध हुवा कि व्यञ्जन अक्षर उच्चार होते ही विलय हो जाते हैं, और स्वर अक्षयरुप रह जाते हैं, तदनुसार अङ्क गणितमें भी (९) नवाङ्क अक्षयरुप है इसका क्षय कदापि नही हो सकता, यह अपने स्वरुपको नही छोडता और कायम रहता है। कायम रहता है इतना ही नही किन्तु जब दूसरे अङ्कोंके साथ मिल जाता है तो उनमें रमण करते हुवे भी लिप्त न होकर अपने स्वरुपमें अलग ही रहकर अन्तिम निज स्वरुपमें निकल आता है, इसी लिए इसकी शोभा विशेष है।

दूसरे अङ्क एक, दो, तीन, चार, पांच, छे, सात और आठ तकके हैं यह निज स्वरुपमें नही रहते और खण्डित होते जाते हैं। जब एक दूसरेके साथ अंक मिलता है तब भी निज स्वरुपमें नही रह

सकते और शेष गिनती के साथ अपने स्वरूपको छोडे हुवे घटित अवस्थामें नजर आते हैं। इसी लिए यह अङ्क आदरणीय नही माने गए और नवाङ्क अन्य अङ्कोंके साथ रमण करता हुवा भी निज स्वरूप को नही छोडता इस लिए आदर पाता है, ससारी आत्माओंको निजका स्वरूप समझने के लिए इस उदाहरणको अपनी आत्मा पर घटित करना चाहिए इस विषयमें एक उदाहरण देखियेगा।

नवका पाहुडा गिनते जाइए और आगे जोड लगाइए तो नवाङ्क ही शेष आवेगा, साथही स्मरण रहे कि शून्य को इसमें नही गिनते हैं।

९ + ९	५४ + ९
१८ + ९	६३ + ९
२७ + ९	७२ + ९
३६ + ९	८१ + ९
४५ + ९	९० + ९

समझमें आ गया होगा कि, एक और आठ नौ, दो और सात नौ, तीन और छे नौ, चार और पांच नौ, पाच और चार नौ, छे और तीन नौ, सात

और दो नौ आठ और एक नौ, इस तरह गुणाकारकी चढती कलामें भी निज-रुपको नही छोडता है और एकसे लगा कर आठ तकके जितने पाहुडे हं, अथवा ग्यारा इक्कीसा, इकतिसा आदि तमाम पाहुडे अपने रुपसे हट जाते हैं और चढती पडती कलाका अनुभव करते हुवे कभी कम कभी ज्यादे होते रहते हैं, लेकिन ग्यारा, इक्कीसा, इकतिसाके किसी भी पाहुडे के साथ नवाङ्क शामील हो जाता है तो कितनीही चढती कला पाकर भी अपने स्वरुपको नही छोडता और शेषमें अक्षय रुप तैर आता है जिसका उदाहरण देखिये।

१२ + ९ + १०८ + ९
१३ + ९ + ११७ + ९
१४ + ९ + १२६ + ९
१५ + ९ + १३५ + ९
१६ + ९ + १४४ + ९
१७ + ९ + १५३ + ९
१८ + ९ + १६२ + ९
१९ + ९ + १७१ + ९
२० + ९ + १८० + ९

उपर बताए मुवाफिक बारह नवां आदिसे वीसके पाहुडे तक गिनते जाइए और १०८–११७ की अनुक्रमसे गिनती करिए तो शेष नौ अङ्क आवेगा इसी तरह किसी भी अंकके कितनेही पाहुडे नौका

अङ्क लगा कर गिनते जाइए और गुणाकारके अङ्ककी जोड दीजिये तो शेष नवाङ्क ही आवेगा इसमें किसी प्रकारका सन्देह नही है।

इसके अतिरिक्त अपनी इच्छाके मुआफिक सैकडो हजारों लाखोंके अङ्क लिख लो और अनुक्रमसे जोडते जाइए जहा तक नवाङ्क शेष न आ जाय अङ्कके योगको कम करके शेषाङ्क निकालिए और इसी तरह करते जाइए आखिर कार अवशेष नवाङ्क ही आवेगा इसमें किसी प्रकारका सन्देह नही है। उदाहरण देखिए।

५३४८	३२३५
२०	१३
५३२८	३२२२+९
१८+९	

पाच हजार तीनसौ अडतालीस लिखे और इन अङ्ककी गिनतीकीतो पाच, तीन, चार. आठको जोडते बीस आए, इन बीसको पाच हजार तीनसौ अडतालीसमें से कम किए तो शेष पाच हजार तीनसौ अठ्ठाइस रहे अब पाच, तीन, दो, आठकी गिनतीकी

तो अट्ठारा आए वस एक और आठ–नौ वही शेपाङ्क अक्षयरुप नौ रह गया। इस तरहसे चाहे कितनी ही गिनतीके अङ्क रख उपरोक्त कथनानुसार गणित करते जाइए शेपाङ्क नौ रह जायगा. इस तरह नौ के अङ्कको महिमा वताई जिससे सिद्ध हो जाता है कि नवाङ्क अक्षय रुप है कभी खण्डित नही होता। जवके नवाङ्कको इतनी महिमा है और अक्षयताका भण्डार है तो सार रुप नवकार, नवपदमें अक्षयताका समावेश कितने दरजे है सो मेरे जैसा क्षुद्रात्मा क्या वता सकता है। इनकी तो अपरम्पार महिमा शास्त्रोंमें प्रतिपादित है, जिसको चवदापूर्वकासार वताया गया उसके चमत्कारका कोन पार पा सकता है। ऐसे महामंत्रका स्मरण करनेवाला दरिद्री नही रह सकता लेकिन श्रद्धा, संतोष, एकाग्रता, शुद्धोच्चार और विधि विधान सहित स्मरण हो तो अवश्यमेव फलदाई होता है। अतः इच्छावान पुरुषको चाहिए कि श्री नवकारमहामंत्र कल्पमें अलग अलग कार्यकी सिद्धिके लिए जो विधि विधान वताये गये हैं तदनुसार गुरु गम प्राप्त करके ध्यान स्मरण करेंगे तो अवश्य फल दाई होगा।

माला प्रकरण

ध्यान स्मरण करने वालोंके लिये जाप सख्या बतानेके हेतु मालाकी आवश्यक्ता होती है, इसी लिए मालभी ध्यानके एक अङ्गरूप है। माला सूतकी, रेशमकी सोनेकी, चादीकी, रत्नकी, चदनकी, रुद्राक्षकी, अकलबेरकी, केरबेकी, मूगाकी, और मोतीकी जैसी जिसकी शक्ति और कार्य हो तदनुसार माला लेना चाहिए। जिस हाथमें माला रहती है उस हाथको माला फेरते समय हृदयके पास स्पर्श करते हुवे रखना, और मालाको दाहिने हाथके अङ्गुठे पर रखना चाहिए, मालाके मणिये फिराते समय उनके नख न लगना चाहिए और मालामें जो मेरु होता है उसको उल्लङ्घन नही करना जो मनुष्य माला फेरते समय मणियोंके नख लगाते है या मेरुका उलङ्घन करते है, उनको लाभ कम होता है इस लिए माला फेरते समय विधानको याद रखना चाहिए। शुभ कार्यके लिए सफेद माला साफ-सुथरी और एकसा मणियेकी लेना चाहिए। कष्ट निवारणार्थ लाल रग

जो मोक्ष प्राप्तीके अभिलाषी हैं, और निरंतर यही भावना रखते हैं उनको चाहिए कि माला फेरते समय अङ्गूठे पर रख करके अनामिका उङ्गलीसे जाप करे। जिनको शुभ कामनाके लिए माला फेरना है, और द्रव्यप्राप्ति कुटम्बशान्ति, सन्तानवृद्धि, एहिक सुख द्रव्यादिके लिए मध्यमा उङ्गलीसे फेरना चाहिए, जिनको क्रूर कार्य, मारण, उच्चाटनके लिए जाप करना हो वह अङ्गूठेसे माला फेरे, और रिपुक्षय, वैरनःशाय या क्लेशादिके नाश निमित्त तर्जनी उङ्गलीसे माला फेरना चाहिए इस तरह मालका विधान समझ कर उपयोग सहित एकचित्तसे ध्यान स्मरण करने वालोंको अवश्य सिद्धि प्राप्त होगी।

आवर्त्त प्रकरण

आवर्त्तसे जाप करना भी बहुत श्रेष्ट बताया गया है, जिन महानुभावोंको मालाके बजाय अपने हाथकी उङ्गलियों पर जाप संख्या पूरी करना हो उसीका नाम आवर्त्त है और यह रीति सुगम भी है इस तरह ध्यान करनेसे मनभी स्थिर रहती है और

आसनभी जम जाता है आवर्त्तके भेद तो विशेष हैं लेकिन यहा पर तो उन्हींका वर्णन किया जायगा कि जो समझमें आ गए हैं, और प्रत्येक आवर्त्तको सुगमता से समझनेके लिए हाथके पञ्जेका चित्र बता कर उङ्गलियो पर नम्बर दिये गए हैं जिसको देखने से समझनेमे और भी सुविधा होगी।

आवर्त्तसे माला फेरनेका पहला विधान इस तरहसे बताया है कि निजके दाहिने हाथकी उङ्गलियोंमेंसे कनिष्टा उङ्गलीके नीचेके पेरवेंसे शुरुआत करे, जिससे कनिष्टाके तीनों पेरवें चोथा अनामिकाके उपरका पाचवा मध्यमाके उपरका छट्ठा तर्जनीके उपरका सातवा तर्जनीके मध्यका आठवा तर्जनीके नीचेका नौवा मध्यमाके नीचेका दशवा अनामिकाके नीचेका ग्यारहवा अनामिकाके मध्यका और बारहवा मध्यमाके मध्यका, इस तरहसे बारह हुवे सो नौ वार गिनलेनेसे एक माला पूरी हो जाती है, इसीका नाम आवर्त्त है, इस आवर्त्तसे जो जाप करते हैं उनको शान्ति तुष्टि पुष्टि तत्काल होती है अतः यह आवर्त्त आदरणीय है।

शङ्खावर्त्त प्रकरण

दूसरी रीति शङ्खावर्त्तकी बताई गई है जो अपने दाहिने हाथकी उङ्गलीयों पर ही गिना जाता है इसकी शुरुआत मध्यमा उङ्गलीके मध्यका पेरवां फिर दूसरा अनामिकाका मध्य, तीसरा अनामिकाके नीचेका चोथा कनिष्टाके नीचेका पांचवां कनिष्टाके मध्यका छट्ठा कनिष्टाके उपरका सातवां अनामिकाके उपरका आठवां मध्यमाके उपरका नौवां तर्जनीके उपरका दशवां तर्जनीके मध्यका ग्यारहवां तर्जनीके नीचेका और वारहवां मध्यमाके नीचेका इस तरह इन वारह को नौदका गिननेसे एक माला पूरी हो जाती है। इसीका नाम शङ्खावर्त्त है, और जो मनुष्य इस विधानसे जाप करते हैं उनको इस आवर्त्तके कारण ही भूत, पिशाच, व्यन्तर आदिसे भय प्राप्त नही होता और दुष्ट देव नही सताते और जाप भी शीघ्रतासे फलता है, मनोकामना सिद्ध होती है शांति मिलती है, सुख पहुंचता है, और धैर्यता आती है इस लिए यह आवर्त्त भी ध्यान करने योग्य है। जिसका चित्र पाठकोंके सामने है।

मन्द्यावर्त्त प्रकरण

तीसरा नन्दावर्त्त बताया गया इस आवर्त्तको सौम्य माना गया है जिसको तर्जनी उङ्गलीके उपरके पेरवेंसे शुरुआत करे, दूसरा तर्जनीका मध्य, तीसरा तर्जनीके नीचेका छट्ठा अनामिके मध्यका, सातवां अनामिकाके उपरका आठवा मध्यमाके उपरका नौवा मध्यमाके मध्यका इस तरह नौ हुवे जिनको बारह वरूत गिननेसे एक माला पूरी होती है। इस आवर्त्तको बहुत मङ्गलिक माना गया है, सौम्य-स्वभावी है, शान्ति, तुष्टि, पुष्टि के देने वाला है इस लिए यह आवर्त्तभी आदर करने योग्य है, जिसका चित्र आपके सामने है।

ॐवर्त्त प्रकरण

यह आवर्त्त उन पुरुषोंके लिए कामका है कि जो ॐ का जाप किया करते हैं। ॐ की महिमा तो पारावार है जिसको जैन शास्त्रोंमे प्रणवाक्षर कहते हैं, और इसमें अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधू इन पाच पदकी स्थापना मानी गई है

जिसका अद्भुत चमत्कार है क्यों कि नवकार मंत्रके पांचो पदका इसमें समावेश है, इस लिए जो इसका ध्यान किया करते हैं उनको यह आवर्त्त बहुत उपयोगी माना गया है, जिसको गिनते हुवे प्रथम मध्यमाके मध्यका पेरवां, दूसरे अनामिकाके मध्यका, तीसरा अनामिकाके उपरका, चोथा मध्यमाके उपरका, पांचवां तर्जनीके उपरका, छट्ठा तर्जनीके मध्यका सातवां तर्जनीके नीचेका, आठवां मध्यमाके नीचेका नौवां अनामिकाके नीचेका दशवां कनिष्ठाके नीचेका ग्यारहवां कनिष्ठाके मध्यका और वारहवां कनिष्ठाके उपरका इस तरह इन वारहको नौ वार गिनते हुवे एक माला पुरी होती है, और जितने जाप होते हैं उतनाही आलेखन ॐ का उङ्गलियोंके पेरवों पर होता जाता है इसी लिए ॐ के जो उपासक हैं वह इस आवर्त्तसे जाप किया करते हैं और ॐ के जापका वर्णन करना तो शक्तिसे बाहर है। इसी आवर्त्त पर दूसरे मंत्रकी या और कोई साधनाकी माला गिनी जाय तो बहुत ही लाभदाई है, विशेषमें आवर्त्तके विधानका चित्र आपके सामने है सो देख लेवें।

दूसरा ॐवर्त्त प्रकरण

उपर बताए हुवे ॐवर्त्तकी दूसरी तरकीब इस तरह पर है कि, प्रथम शुरुआत अनामिकाके मध्यसे करें, दूसरा मध्यमाका मध्य, तीसरा मध्यमाके नीचेका, चोथा अनामिकाके नीचेका, पाचवा कनिष्ठाके नीचेका, छट्ठा कनिष्ठाके मध्यका, सातवा कनिष्ठाके उपरका, आठवा अनामिकाके उपरका, नौवा मध्यमाके उपरका, दशवा तर्जनीके उपरका, ग्यारहवा तर्जनीके मध्यका और बारहवा तर्जनीके नीचेका, इस तरहसे नौ वार जाप करनेसे माला पुरी होती है और ॐवर्त्त बनता है। इसमें भी प्रति जापके साथही उङ्गलियों पर ॐ का आलेखन होता जाता है और यहभी बहुत आदरणीय है जिसका चित्रभी दिया जाता है सो देख लेवें और जितना लाभ उठा सकें उठाइएगा।

एक तीसरी तरकीब ॐ वर्त्तकी और भी है लेकिन यह दक्षिणावर्त्त नही होनेसे जाप करनेमें कम लेते हैं तथापि जानकारीके लिए यहा लिखते हैं।

प्रथम मध्यमा उङ्गलीके मध्य भागके पेरवेंसे शुरुआत करे, दूसरा अनामिकाका मध्य, तीसरा अनामिकाके नीचेका, चोथा मध्यमाके नीचेका, पांचवां तर्जनीके नीचेका, छट्ठा तर्जनीका मध्य, सातवां तर्जनीके उपर, आठवां मध्यमाके उपरका, नौवां अनामिकाके उपर का, दशवां कनिष्ठाके उपरका, ग्यारहवां कनिष्ठाके मध्यका, और बारहवां कनिष्ठाके नीचेका, इस तरह तीसरी तरकीब है जिसका चित्रभी दिया गया है सो जैसा जिसको पसंद हो आदर करे।

नवपद आवर्त्त प्रकरण

नवपद आवर्त्ततो जैनियोंमें मशहूर है जो महामंत्र सूचक है और यह पुस्तक ही सारा नवपद पर ही लिखी जा रही है, श्रीनवकार महामंत्रका दूसरा नाम नवपद है जिसके आवर्त्तसे कोइ जाप करना चाहे तो तरकीब यूं बताई गई है कि मध्यमा उङ्गलीके मध्यके पेरवेंसे शुरु करे, दूसरा मध्यमाके उपरका, तीसरा तर्जनीके मध्यका, चोथा मध्यमाके नीचेका, पांचवां अनामिकाके मध्यका, छट्ठा तर्जनीके उपरका,

सातवा तर्जनीके नीचेका, आठवा अनामिकाके नीचेका, नौवा अनामिकाके उपरका इस तरहसे बारह दफा गिननेसे एक माला पुरी होती है, यह विधान खास काम हो और थोडा स्मरण हो उसमें उपयोगी होता है लम्बे जापमें और विशेष संख्यामें करना हो तो इस आवर्त्तसे गिनते समय भूल हो जाना संभव है इस आवर्त्तकाभी चित्र देकर नम्बर दे दिये है सो जिज्ञासुको ठीक तरह समझ लेना चाहिए।

ह्रींवर्त्त प्रकरण

ह्रीं मायाबीज है जिसका वर्णन इसी पुस्तकमें आगे आवेगा यहा तो सिर्फ आवर्त्तका सम्बन्ध है इस लिए यही बताया जाता है, ह्रीं आवर्त्तके खोज करने पर भी बराबर पता नही पा सके है तथापि जो प्राप्त कर सके हैं वही पाठकोंके सामने रखते हैं। इसके दो आवर्त्त हमे मिले है जिसमें पहला वर्त्त तो तर्जनीके उपरके पेरवेसे चलता है, दूसरा मध्यमाके उपरका, तीसरा अनामिकाके उपरका चोथा कनिष्ठा के उपरका, पाचवा कनिष्ठाके मध्यका, छट्टा अना-

मिकाके मध्यका, सातवां मध्यमाके मध्यका, आठवां तर्जनीके मध्यका, नौवां तर्जनीके नीचेका, दशवां मध्यमाके नीचेका ग्यारहवां अनामिकाके नीचेका, और बारहवां कनिष्टाके नीचेका इस तरह नौं दफा गिनलेनेसे एक माला पूरी हो जाती है, यह ह्रींवर्त्त बराबर ध्यानमें नही आता है तथापि जैसा पाया है वैसाही पाठकोंके सामने रखते हैं, और साथ ही इसका चित्रभी दिया गया है सो देख लेवें।

ह्रॅींवर्त्त एक दूसरी तरकीवसे भी गिनते हैं सो इस तरह है कि उपर मुवाफिक बारह गिन लेने बाद मध्यमाके मध्यका तेरहवां, चौदहवां अनामिकाका मध्य, पन्द्रहवां कनिष्टाका मध्य, सोलहवां कनिष्टाके नीचेका, सत्तरहवां अनामिकाके नीचे, अट्ठारहवां मध्यमाके उपर, उन्नीसवां तर्जनीके उपर, वीसवां तर्जनीका मध्य, इक्कीसवां तर्जनीके नीचे, बाइसवां मध्यमाके नीचे, तेइसवां अनामिकाके नीचे, चोइसवां कनिष्टाके नीचे। इस तरह चोवीस तीर्थङ्करोंकी स्थापना वर्णवार ह्रींमे है उस पद्धतीसे उङ्गलियोंपर चोबीसजिनका जाप इस प्रकार कर सकते हैं, यह आ-

वर्त्त जीकी उपासना करने वालोंके लिए आदरणीय है इस विषयमें और भी खोज की जायगी तो विशेष जानकारी होना सम्भव है।

पटनावर्त्त प्रकरण

पटनावर्त्तके लिए ऐसा पाया गया है कि पांच पदका इससे जाप होता है, प्रथम ब्रह्मरन्ध्रमें, दूसरा ललाटमें, तीसरा कण्ठ पिञ्जरमें, चोथा हृदयमें, और पाचवा नाभि कमलमें पञ्चपरमेष्ठिको स्थित करके ध्यान करता जाय।

दूसरी तरकीब पटनावर्त्तकी यह भी है कि प्रथम ब्रह्मरन्ध्रमें, दूसरे ललाटमें, तीसरे चक्षु चोथे श्रवण, और पाचवें मुख इस तरह ध्यान करता जाय।

तीसरी एक तरकीब और भी है जिसके लिए कहा है कि—

नेत्रद्वंद्वे श्रवणयुगले नासिकाग्रे ललाटे।
वक्त्रे नाभौ शिरसि हृदये तालुनि भ्रूयुगान्ते॥
ध्यानस्थानान्यमलमतिभि र्कीर्त्तितान्यत्र देहे।
तेष्वेकस्मिन् विगत विषय चित्तमालम्बनीयम्॥१॥

भावार्थ-मनुष्यके निर्मल देहमें दोनों नेत्र, दोनों कान, नासिका, ललाट, मुख, नाभि, मस्तक, हृदय, तालु, और दोनों भ्रकुटीका मध्यभाग, इन दशको ध्यान करनेके स्थान बताए गए हैं, इस लिए इन दशमेंसे चाहे किसी एकके विषे विकार रहित होकर ध्यान करे तो बहुत ही उत्तम है। इस ध्यानको इन दश स्थानमें किस तरहसे जमाना चाहिए इसका विवरण जो ध्यान करनेके अभ्यासी हों उनके साथ रहकर सीखना चाहिए इसमें गुरुगमकी विशेष आवश्यकता है।

सिद्धावर्त्त प्रकरण

सिद्धात्मा और चोवीस जिन भगवानके ध्यानकी तरकीब इस आवर्त्त द्वारा इस तरहसे बताई गई है कि, दोनों हाथोंको सामने खुले रखकर दोनों हाथोंकी आयुष्य रेखाको मिलावे बराबर मिलानेके बाद उसको सिद्धशिलाकी भावनासे देखे और आठों उङ्गलियोंके चोवीस पेरवोंको चोवीस जिन भगवानकी स्थापनासे देखे और बाकी जगहमें सिद्धात्मा समझ

कर ध्यान करता रहे यह तरकीब उत्तम है हरएक जगह जहा आलम्बन भी न हो और ध्यान करनेका दिल हो जाय तो स्थिरता रखनेमें यह आवर्त्त काम आ सकता है, जिसका चित्र भी पाठकोंके समझनेके लिए साथ ही दिया है सो देख लेवें।

इस तरहसे आवर्त्तका बयान पूरा हो गया अब सिर्फ कमलावर्त्तका बयान बाकी है सो ठीक तरह समझने पर पाठकोंके सामने रखेंगे।

आसन प्रकरण

आसन शुद्ध करना और अनुकुल आसनमें जय प्राप्त करना ध्यान साधनेमें सहायक होता है। आसन जम जानेसे शरीर भी उपाधि रहित रहता है और शारीरिक स्थिर आजानेसे मन भी स्थिर हो जाना सम्भव है। आसन जमानेके लिए एकान्त स्थान हो जहा किसी प्रकारकी चिन्ता भय प्राप्त होनेकी सम्भावना न हो अनुकुल सयोग और समाधि सहित ध्यान हो सके ऐसे स्थानको पसन्द करना चाहिए। जिसमें भी तीर्थस्थान—जिनेश्वर भगवानकी कल्याणक भूमि हो तो विशेष आनन्ददायक होगा।

द्रव्यप्राप्ति, सम्पत्ति, शांति, सौभाग्य आदि कार्योंमें सफेद आसन सफेद वस्त्र और सफेद माला व पूर्व दिशाकी तरफ मुख करके बैठना चाहिए। कष्ट निवारणके लिये उत्तर दिशाकी तरफ मुख करके बैठना और लाल आसन लाल वस्त्र लाल ही माला लेना चाहिए। मारण उच्चाटन आदि क्रूर कार्यमें भी लाल वस्त्र आदि काममें आते है और उत्तर दिशा पश्चिम दिशा व दक्षिण दिशाकी तरफ मुख करके बैठे। पीले वस्त्र व आसनादिका उपयोग भी शान्ति तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धिके लिए करते है और पश्चिम दिशामें मुख करके बैठे तो भी चल सकता है, जिसका कुछ खुलासा विधान प्रकरणमें करेंगे।

आसनके रंग जाननेके बाद आसन सिद्ध करना सीखना चाहिए, आसन वैसे तो चोरासी प्रसिद्ध हैं, उन सबका उल्लेख करना हमारी शक्तिसे बाहर है, लेकिन उपयोगी आसन जिनको गृहस्थ कर सके उन्हींका वर्णन करेंगे।

आसनोंमेंसे पर्यङ्कासन, वीरासन, वज्रासन, पद्मासन, भद्रासन, दण्डासन, उत्कटिकासन, गौदो-

हिकासन, और कायोत्सर्गासन, यह नौ प्रकारके आसन गृहस्थ सुगमतासे कर सकता है। पहला पर्यङ्कासन जिसे सुखासन भी कहते हैं, यह आसन बहुत ही आरामसे सिद्ध हो सकता है, जिसको इस तरहसे करते हैं कि दोनों जङ्घाके नीचेका भाग पावके उपर करके बैठे याने पालखी लगाकर बैठे और दाहिना व बाया हाथ नाभि कमलके पासमें ध्यान मुद्रामें रखे तो पर्यङ्कासन बन जाता है।

दाहिना पाव बायी जङ्घा पर व बाया पाव दाहिनी जङ्घा पर रख कर स्थिरतासे बैठे तो वीरा-सन बन जाता है, और वीरासनमेंही पीठकी तरफसे लेकर दाहिने पावका अङ्गुठा दाहिने हाथसे और बायें पावका अङ्गुठा बायें हाथसे पकडे तो वीरा-सनका वज्रासन बन जाता है। दोनो जङ्घाको परस्पर मध्यमें सम्बन्ध कर बैठें तो पद्मासन बनता है। पुरुष चिह्नके आगे पावके दोनो तलिए मिलाकर उनके उपर दोनो हाथकी उङ्गलिया परस्पर एकके साथ एक याने कर सम्मेलन करनेके बाद दशों उङ्गलिया ठीक तरह दीखती रहे इस प्रकार हाथ

जोड कर वैठना उसका नाम भद्रासन है। जिस आसनमें वैठनेसे उङ्गलियां गुल्फ व जङ्घा भूमिसे स्पर्श करे इस प्रकार पांवोंको लम्बे कर वैठना उसको दण्डासन कहते हैं। गुदा और एडीके संयोगसे वीरता पूर्वक वैठे उसको उत्कटिकासन कहते हैं। गाय दूहनेको वैठते हैं उस तरह वैठ ध्यान करना उसको गौदोहिकासन कहते हैं। खडे खडे दोनों भुजाओंको लम्बी कर घुटनेकी तरफ वढाना या वैठे वैठे कायाकी अपेक्षा नही रख कर ध्यान करना उसको कायोत्सर्गासन कहते हैं। इस तरहका आसन धार्मिक क्रियामें करनेकी प्रथा प्रचलित है। ध्यान करनेको खडे रहते हैं उस समय हाथोंको दाहिनी वांयी ओर ज्यादे फैलाना नहि चाहिए, सीधे हाथ रख कर खडे रहते समय पावोंकी उङ्गलियोंके वीचमें चार अङ्गुल अन्तर रखना व एडीयोंके वीचमें चार अङ्गुलसे कुछ कम अन्तर रख कर खडे रहना चाहिए। इस तरहसे खडे रहनेसे जिनमुद्रा वन जाती है और ध्यान करनेमें यह वहुतही उपयोगी है, अतः अनुकुलता व निजके सघयन-शक्ति देखकर आसन सिद्ध करलेना चाहिए।

ध्यान करनेके लिए बैठें तब झुक कर अथवा शरीरको शिथिल बना कर नहीं बैठना चाहिए, बिलकुल टटार होकर इस तरह बैठना कि जिससे श्वासकी नली सीधी रहे और श्वास रोकने व निकालनेमें बाधा न आवे इस तरहसे सुखासन पर जो बैठते हैं उनका ध्यान अच्छा जमता है।

ध्यानशक्तिके प्रभावसे तीन लोकको विजय कर मोक्षसुख पा सकते हैं। इस लिए ध्यान शक्ति पर श्रद्धा रखना चाहिए और ध्यान करते समय अनिवार्य सङ्कट सहन करना पडे तो भी दृढ चित्त रह कर एकाग्रता सहित ध्यान करते रहना, आत्मविश्वास रखना, ज्ञानियोंके वचनको सत्य मानना तो अवश्य उच्च पद प्राप्त होगा।

कितनेक भाई कहा करते हैं कि क्या कर मन वशमें नहीं रहता इस लिए ध्यान करनेमें स्थिरता नहीं आती। इस तरहका कहना स्वच्छन्दताका है। मन तो वशमें रहता है किन्तु जप-ध्यान करते समय हम नहीं रख सकते। अगर मन वशमें नहीं रहता हो तो रुपया गिनते वख्त नोट सम्भालते वख्त,

ॐ में चोवीस जिन स्थापना



पृष्ठ-४५

Krishna Printery, Ratanpole Ahmedabad,



श्री नवकार महामंत्र कल्प



ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः पञ्चपरमेष्ठिभ्यो नमः
श्रीनवकार महामन्त्र कल्प लिख्यते ।

॥ आत्मशुद्धि मंत्र ॥

॥ ॐ ह्रीँ नमो अरिहन्ताण ॥

॥ ॐ ह्रीँ नमो सिद्धाण ॥

॥ ॐ ह्रीँ नमो आयरियाण ॥

॥ ॐ ह्रीँ नमो उवज्झायाण ॥

॥ ॐ ह्रीँ नमो लोए सव्वसाहूण ॥

श्रीनवकार महामन्त्र कल्पमेंसे किसी भी जापकी शुरुआत करनेसे पहले आत्मशुद्धिके लिए मङ्गलके हेतु मुत उपरोक्त मन्त्रकी दस माला अवश्य फेरना

चाहिए जिससे मङ्गलिक कार्यकी सिद्धिमें सहायता मिलेगी।

॥ इन्द्राव्हाहन मंत्र ॥

ॐ ह्रीं वज्राऽधिपतये आँ ह्रूँ एँ ह्रूँ ह्रौं श्रूँ ह्रूँ क्षः ॥२॥

प्राण प्रतिष्ठाके लिए आह्वानन करनेको उपरोक्त मंत्र वताया है, इस मंत्रका इक्कीस जाप करके प्राण प्रतिष्ठा करलेने बाद इसी मंत्र द्वारा निजकी चोटी (शिखा) जनेऊ कङ्कण कुंडल अंगुठी, वस्त्र आदिको मंत्रित करके सर्व सामग्रीको शुद्ध कर लेना चाहिए।

॥ कवच निर्मल मंत्र ॥

ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिन्यै नमः स्वाहा ॥३॥

कवच दो प्रकारके वताए गए हैं, एक तो यंत्र जिसको मादलियेमें रखते हैं और वह अष्टगंधसे भोजपत्र पर लिखा हुवा होता है, दूसरा श्री सिद्धचक्रयंत्र जिसका आलम्बन लेकर ध्यान करनेको

बैठते हैं, जिसमें मंत्राक्षर आदि होते है और कई तरहकी स्थापनाओंसे सुशोभित होता है। ऐसे कवचको उपरोक्त मंत्र द्वारा निर्मल बनाना चाहिए।

॥ हस्त निर्मल मंत्र ॥

ॐ नमो अरिहन्ताण अुन्देवि प्रगस्नहस्ते हूँ फट् स्वाहा ॥४॥

इस मंत्रका बोल कर निजके हाथोंको धूपके अथवा अगरबत्तीके धुँवे पर रख कर शुद्ध करना चाहिए।

॥ काय शुद्धि मंत्र ॥

ॐ णमो ॐ ह्रीं सर्वपापक्षयकारि ज्वालासहस्रज्वलिते मत्पाप जहि जहि दह दह क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षीरधवले अमृतसम्भवे बधान बधान हूँ फट् स्वाहा ॥५॥

पापकर्मोंका नाश करनेके लिए अन्तरायकर्मको मिटानेके लिए और शरीरको शुद्ध करनेके हेतु व अंतःकरणको शुद्ध करनेकी भावनाके लिए उपरोक्त मंत्रका जाप करना चाहिए जिससे तत्काल सिद्धि होगी।

॥ हृदय शुद्धि मंत्र ॥

ॐ ऋषभेण पवित्रेण पवित्रीकृत्य आत्मानं पुनीमहे स्वाहा ॥६॥

प्रत्येक मंत्र साधनके काममें अंतःकरणको शुद्ध रखनेकी अति आवश्यकता है इस लिए इस मंत्रका जाप करना चाहिए, और ईर्ष्या कुविकल्प चार कषायका त्याग करना, झूठ नहीं बोलना और हृदयको निर्मल बनाना।

॥ मुख पवित्र करण मंत्र ॥

ॐ नमो भगवते क्ष्रौँ ह्रीँ चन्द्रप्रभाय चन्द्रमहिताय चन्द्रमूर्त्तये सर्वसुखप्रदायिने स्वाहा ॥

इस मंत्र द्वारा मुख पवित्र बनाना जिससे चेहरे पर गम्भीरता, सरलता, नम्रता, सुशीलता, सभ्यता आदिका भाव मुखपर झलकता रहे जिससे सज्जनताका परिचय हो जाय और कृत्रिमताका भास न होने पावे।

॥ चक्षु पवित्र करण मंत्र ॥

ॐ ह्रीँ क्ष्रीँ महामुद्रे कपिलशिखे हूँ फट् स्वाहा ॥८॥

उपरोक्त मन्त्रद्वारा नेत्र पवित्र करना चाहिए, और आखोंमे स्नेहभाव, सरलता, भद्रिकता, भव्यता, के भावका प्रकाश हो, इस तरहसे दृष्टि रखना चाहिए। दृष्टि सिद्धिसे बहुत बडे काम सिद्ध हो सकते हैं। मन्त्र साधनमें दृष्टियोग बहुत सहायक होता है, ध्यान जमानेके लिए चित्तकी स्थिरताके लिए, दृष्टि स्थिर रखनेका प्रयत्न करना चाहिए, दृष्टि सिद्धि हो जाय तो उच्च स्थितिमें आते देर नही लगती, उत्कर्ष अवस्थामें आनेके लिए यह साधन अमूल्य समझना चाहिए।

॥ मस्तक शुद्धि मन्त्र ॥

ॐ नमो भगवती ज्ञानमूर्त्तिः ससशतश्रुकादि महाविद्याधिपतिः विश्वरूपिणी ह्रीँ ह्रैँ क्ष्रौँ क्ष्राँ ॐ शिरस्त्राणपवित्रीकरण ॐ णमो अरिहन्ताण हृदय रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा ॥९॥

ज्ञान ध्यान मन्त्र तन्त्र साधन प्रयोग आदि तमाम कार्योंमें दिमागी ताकतकी आवश्यक्ता है जहा मगजशक्तिका अभाव होता है वहा किसी तरह की

साधना सिद्ध नहीं हो सकेगी इस मंत्र द्वारा मस्तिष्क निर्मल करना चाहिए जितनी आवश्यकता हृदय-शुद्धिकी है उतनी ही मस्तिष्क शुद्धि की है मगजकी स्थिरता साध्यविन्दुको तत्काल सिद्ध करती है।

॥ मस्तक रक्षा मंत्र ॥

ॐ णमो सिद्धाणं हर हर विशिरो रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा ॥१०॥

मंत्रका आराधन करते समय कोई देव दानव मगजकी स्थिरताको खराब न करदे इस हेतुसे इस मंत्र द्वारा मस्तक रक्षा की भावना रखना चाहिए।

॥ शिखा बन्धन मंत्र ॥

ॐ णमो आयरियाणं शिखां रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा ॥११॥

इस मंत्रको बोल कर शिखा—चोटीको पवित्र करना मंत्र बोलते जाना और चोटीको लपेटते रहना, चोटीके गांठ नही लगाना सिर्फ लपेट करही स्थिर कर देना।

॥ मुख रक्षा मंत्र ॥

ॐ णमो उवज्झायाण एहि एहि भगवति वज्र कवच वज्रिणि रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा ॥१२॥

मुखके अवयवोंको किसी तरहका नुकसान न पहुचे, देव दानव द्वारा किसी प्रकारकी पीडा न होने पावे इस हेतुसे इस मत्रका ध्यान करना।

॥ इन्द्रस्य कवच मत्र ॥

ॐ णमो लोए सव्वसाहूण क्षिप्र साधय साधय वज्रहस्ते शूलिनि दुष्ट रक्ष रक्ष आत्मान रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा ॥१३॥

किसी दुष्ट मनुष्यकी तरफसे सताप पीडा आई हो या आने वाली हो तो इस मत्रसे मिट जाती है और निजके आत्माकी रक्षा होती हैं।

॥ परिवार रक्षा मत्र ॥

ॐ अरिहय सर्वं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा ॥

इस मत्र द्वारा कुटम्ब परिवारकी रक्षाके लिए ध्यान करना चाहिए कोई आपत्ति सकट हो तब उपयोग करे।

॥ उपद्रव शांति मंत्र ॥

ॐ ह्रीँ क्ष्वीँ फट् स्वाहा किटि किटि घातय घातय परविघ्नान् छिन्द्धि छिन्द्धि परमंत्रान् भिन्द्धि भिन्द्धि क्षः फट् स्वाहा ॥१५॥

किसी शठ पुरुषकी ओरसे मानव प्रकृति द्वारा या मंत्र प्रयोग द्वारा, भूत प्रेत द्वारा कष्ट आया हो या आनेवाला हो तो उपरोक्त मंत्र सारे कष्टोंको रोक देता है, यह मारण उच्चाटन मूंठ आदिको भी रोक सकता है।

॥ पञ्चपरमेष्टि मंत्र ॥

ॐ अ. सि. आ. उ. सायनमः ॥१६॥

इस पञ्च परमेष्टिमंत्रका पटनावर्त्त-मुद्रा से जो आगे आवर्त्त प्रकरणमें बताई गई है उस पर ध्यान करे तो मनोवाञ्छित फलकी प्राप्ति होती है। यह महा कल्याणकारी मंत्र है, इसमें अनेक प्रकारकी सिद्धियां समाई हुई है जो मनुष्य कर्मक्षय करनेके लिए इस मंत्रका ध्यान करना चाहते हैं वह शङ्खावर्त्तसे करेंगे तो उनको अधिक लाभ होगा।

॥ महारक्षा सर्वोपद्रव शांति मंत्र ॥

नमो अरिहन्ताण शिखायां। नमो सिद्धाण मुखावरणे। नमो आयरियाण अङ्गरक्षायां। नमो उवज्झायाण आयुधे। नमो लोए सव्व-साहूण मौर्वी। एसो पञ्चनमुक्कारो–पादतले वज्र-शिला सव्वपावप्पणासणो, वज्रमयप्राकार चतु-र्दिक्षु मङ्गलाण च सव्वेसिं, खादिराङ्गारखातिका, पढम हवइ मङ्गलं, वप्रोपरि वज्रमयपिधान १७

यह महा रक्षामंत्र तमाम तरहके उपद्रवको हटा-नेवाला है इसका उच्चार करते समय शिखा अर्थात् मस्तक–चोटीकी जगह हाथ लगाना मुखावरण कहते मुख पर हाथ फेरना, अंगरक्षा कहते शरीर पर हाथ फेरना इस तरह इसका विधान जो सकली-करण रूप बताया गया है जिसका स्मरण बहुतही लाभदाई होगा हर तरहके विघ्न नाश होंगे।

॥ महामंत्र ॥

ॐ णमो अरिहन्ताण, ॐ हृदय रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। ॐ णमो सिद्धाण ह्रीं शिरो रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। ॐ णमो आयरियाण हूँ शिखा रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। ॐ णमो उव-

ज्झायाणं हैं एहि एहि भगवति वज्रकवचे वज्र-पाणि रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं हः। क्षिप्रं साधय साधय वज्रहस्ते शूलिनि दुष्टान् रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। एसो पञ्चनमुक्कारो वज्रशिलाप्राकारः। सव्वपावप्प-णासणो वप्रोवज्रमयो मङ्गलाणं च सव्वेसिं खादि-रांगारमयीखातिका। पढमं हवइ मङ्गलम् वप्रो-परिवज्रमयपिधानं ॥१८॥

उपरोक्त मंत्र चमत्कारी है इसमें सकलीकरण भी आ गया है, इसके प्रभावसे शांतिका साम्राज्य होगा और तमाम तरहके विघ्न नष्ट होंगे ऋद्धि सिद्धि दाता और मङ्गलिक मंत्र है।

॥ वशीकरण मंत्र (१) ॥

ॐ ह्रीँ नमो अरिहन्ताणं, ॐ ह्रीँ नमो सिद्धाणं, ॐ ह्रीँ नमो आयरियाणं, ॐ ह्रीँ नमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रीँ नमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ ह्रीँ नमो णाणस्स ॐ ह्रीँ नमो दंसणस्स, अमुकं मम वशी कुरुकुरु स्वाहा ॥१९॥

इस मंत्रकी साधना करलेनेके बाद जिसको आधीन करना हो उसका नाम "अमुक" के बजाय लेकर जाप किया जाय तो सवा लक्ष जाप हो जाने पर सिद्ध होता है, और जब कार्यका प्रसङ्ग आवे तब इक्कीस बार जाप करे और प्रति जाप नये वस्त्रके या पगडीके एक गांठ देता जाय और खोल कर फटकारता जाय तो कार्यकी सिद्धि हो जाती है।

॥ वशीकरण मंत्र (२) ॥

ॐ नमो अरिहन्ताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरियाणं, ॐ नमो उवज्झायाणं, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ नमो नाणस्स, ॐ नमो दंसणस्स, ॐ नमो चारित्तस्स, ॐ ह्रीं त्रैलोक्यवशंकरी ह्रीं स्वाहा ॥२०॥

उपरोक्त मंत्रका साधन करके जल वगैरह मंत्रित करके पीलानेसे या कोई वस्तु खिलानेसे प्रयोजन सिद्ध होता है। लेकिन अकार्यके हेतु यह मंत्र काममें न लिया जाय समकितवन्त आत्माको सुकार्यकी तरफ ही दृष्टि रखना चाहिए।

॥ वशीकरण मंत्र (३) ॥

ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं ॥२१॥

इस मंत्रको सिद्धकर उत्तर क्रियामें ऐं ह्रीं के साथ जाप करके वस्त्रके गांठ देता जाय और १०८ वार गांठको शिलापर फटकारता जाय तो कार्यसिद्ध होता है, वस्त्र नया और शुद्ध होना चाहिए।

॥ बन्दीगृह मुक्त मंत्र ॥

णंहूसाव्वस एलो मोण, णंयाज्झावउ मोण, णंयारियआ मोण, णंद्धासि मोण, णंताहंरिअ मोण ॥२२॥

इस मंत्रको विपर्यास कहते हैं, इसको सिद्ध करनेके बाद जाप किया जाय तो बन्दीखानेसे तत्काल छुटकारा हो जाता है चित्त स्थिर रख कर जाप करना चाहिए।

॥ सङ्कटमोचन मंत्र ॥

ॐ ह्रीं नमो अरिहन्ताणं, ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं, ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं, ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं ॥२३॥

इस मन्त्रका साडे बारह हजार जाप करनेके बाद नवाक्षरी मन्त्रको सिद्ध कर लेवे।

॥ नवाक्षरी मन्त्र ॥

ॐ ह्रीँ नमः अर्हं क्ष्मीँ स्वाहा ॥२४॥

इस मंत्रका मनमें ही जाप करे तो दुष्ट मनुष्यका, तस्करका भय मिट जाता है, अनावृष्टि, अतिवृष्टिमें भी इस मन्त्रका उपयोग करे तो चमत्कार बताने वाला है। महाभयके समय या मार्गमें चोरादिके भयको निवारण करनेके लिए इस मन्त्रका जाप करता जाय और चारों दिशामें फुक देता जाय तो भय मिट जाता है।

॥ सर्वसिद्धि मन्त्र ॥

ॐ अरिहन्त सिद्ध आयरिय उवज्झाय सव्वसाहू, सव्वधम्मतित्थयराण, ॐ नमो भगवइए, सुयदेवयाए, सतिदेवयाण, सव्वपवयणदेवाण, पञ्चलोगपालाण, ॐ ह्रीँ अरिहन्तदेव नमः ॥२५॥

इस मन्त्रको सिद्ध करनेके लिए देवस्थान या किसी और जगह शुद्ध देख कर बैठना चाहिए, सर्व

सिद्धिका भण्डार है। कठिन कार्यके समय विधि सहित जाप करनेसे कष्ट मिटता है, और सात बार मंत्र बोलकर वस्त्रके गांठ लगाता जाय तो तत्काल चमत्कार बताता है। व्याघ्रादि हिन्सक प्राणीका या अन्य प्रकारका भय उपस्थित हुवा हो तो नष्ट हो जाता है।

॥ वैरनाशाय मंत्र ॥

णंहूसाव्वस एलो मोण, णंयाज्झावउ मोण, णंयारियआ मोण, णंद्धासि मोण, णंताहंरिअ मोण ॥२६॥

इस विपर्यास मंत्रका कथन पहले कर चुके हैं। लेकिन विधान दूसरा होनेसे फिर उल्लेख किया जाता है। इस मंत्रका सवालक्ष जाप विधि सहित करनेके बाद चोथ या चवदसके दिन साधना करे और सिद्धि क्रियाके बाद परमेष्ठि नमस्कार गिनकर धूलकी चिहुंटी भरकर प्रक्षेप करनेसे वैरभाव–शत्रुता मिट जाती है और परस्पर प्रेम भाव बढता है।

॥ मन चिन्तत फलदाता मंत्र ॥

ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रौँ ह्रः अ. सि. आ. उ. सा. नमः ॥२७॥

इस मंत्रकी एक माला प्रतिदिन फेरना चाहिए, जो इसका आराधन करेंगे उनको मनचिंतित फलकी प्राप्ति होगी। लेकिन सिद्धि अवश्य करलेना चाहिए, बिना सिद्धि किए मंत्र फल नही देते।

॥ लाभदायक मंत्र ॥

ॐ नमो अरिहन्ताणं। ॐ नमो सिद्धाणं। ॐ नमो आयरियाणं। ॐ नमो उवज्झायाणं। ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं। ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः स्वाहा ॥२८॥

इस मंत्रको शंखावर्तसे या पदमावर्तसे गिनना चाहिए इसका जाप उच्चार रहित अर्थात् मनमें ही करना चाहिए होठ जीभ हीले नही और जाप होता रहे तो विशेष लाभदाई होगा।

॥ अंगरक्षा मंत्र ॥

प्रथम स्वच्छ मंगल वज्रमयी शिला मस्तकोपरि, नमो अरिहन्ताणं अंगुष्ठयोः नमो सिद्धाणं तर्जन्योः, नमो आयरियाणं मध्यमयोः नमो उवज्झायाणं अनामिकयोः नमो लोए सव्व-

साहूणं कनिष्ठिकयोः एसो पञ्चनमुक्कारो वज्रमयं प्राकारं सव्वपावप्पणासणो जलभृतां खातिकां, मङ्गलाणं च सव्वेसिं खादिराङ्गारपूर्णां खातिकां, आत्मानं निश्चिन्त्य महाशकलीकरणं ॥२९॥

यह अंगरक्षा मंत्र सकलीकरण सहित है इसका विधान गुरुगमसे जानना चाहिए।

॥ अनुपम मंत्र ॥

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रौं ह्रः अ. सि. आ. उ. सा स्वाहा ॥३०॥

इस अनुपम मंत्रको चित्त स्थिररखकर कायशुद्धिकर विधि सहित जाप करे तो अनुपम फलके देने वाला है।

॥ सर्व कार्य सिद्धि मंत्र ॥

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ. सि. आ. उ. सा. नमः ॥३१॥

यह मंत्र सर्व कार्यकी सिद्धि करने वाला है शुद्धोच्चारसे स्थिरता पूर्वक आराधन करना चाहिए।

॥ वन्दीमुक्त मंत्र ॥

ॐ नमो अरिहन्ताणं ज्म्ल्व्र्यूँ नमः, ॐ

नमो सिद्धाणं झ्म्ल्व्र्यूं नमः, ॐ नमो आयरियाणं रम्ल्व्र्यूं नमः, ॐ नमो उवज्झायाणं ह्म्ल्व्र्यूं नमः, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं क्ष्म्ल्व्र्यूं नमः, अमुकस्य वदिनो मोक्ष कुरु कुरु स्वाहा ॥३२॥

इस मंत्रका साधन करते समय मंत्रको पट्ट पर अष्टगंधसे लिखना, पट्ट सोनेका हो चांदीका तांबेका या जैसी शक्ति हो लेवे। मंत्र लिख कर पट्टको बाजोट पर स्थापित करे, आलम्बनमें श्रीपार्श्वनाथ भगवानकी प्रतिमा अथवा मनमोहक चित्र स्थापित कर सामने बैठे, चित्रको नासिकाके सीधमें ऐसे ढंगसे स्थापित करे कि जो ठीक मध्यमें आवे याने चित्रका मध्य और नासिकाका मध्य सीधा मिला हुवा रहे। बाद में धूप दीप आदि सामग्री जो जयणा सहित काममें लेनेकी हो वह लेवे और पांचसौ पुष्प सफेद जाई के लेकर पुष्प हाथमें लेता जाय और मंत्र बोलता जाय, मंत्र पूर्ण होते ही पुष्पको उर्ध्व स्थितिमें मंत्रके उपर चढाता जाय तो बन्दीवानका छुटकारा होता है। बन्दीवानके लिए कोई दूसरा जाप करे तो भी यह मंत्र काम देता है।

॥ स्वप्ने शुभाशुभ कथितं मंत्र ॥

मंत्र नम्बर ३२ जो उपर बताया है, इसको खडे खडे कायोत्सर्गमें स्थित रह कर ध्यान करे और ध्यान पूरा होने पर किसीसे बोले विना मौनपने भूमिशय्यापर पूर्वदिशाकी तरफ सो जावे तो स्वप्नमें शुभाशुभ फलका भास होता है ॥३३॥

॥ विद्याध्ययन मंत्र ॥

अरिहन्त सिद्ध आयरिय उवज्झाय सव्व-साहू ॥३४॥

इस मंत्रका जाप करनेसे विद्याध्ययनमें सहायता मिलती है, और द्रव्य प्राप्ति व सुखके देनेवाला है।

॥ आतमचक्षु परचक्षु रक्षा मंत्र ॥

ॐ ह्रीँ नमो अरिहन्ताणं पादौ रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीँ नमो सिद्धाणं कटिं रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीँ नमो आयरियाणं नाभिं रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीँ नमो उव-ज्झायाणं हृदयं रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीँ नमो लोए

सव्वसाहूण ब्रह्माण्ड रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीँ एसो पञ्च-नमुक्कारो शिखां रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीँ सव्वपावप्पणासणो आसन रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीँ मङ्गलाण च सव्वेसिं पढम हवइ मङ्गल ॥३५॥

इस मन्त्रकी सिद्धि प्राप्त करनेके बाद इक्कीस जाप करनेसे कार्य सिद्ध हो जाता है इसका विशेष स्पष्टीकरण गुरुगमसे जानना चाहिए, इसका विशेष खुलासा असल प्रतमें नही है। इस मन्त्रमें सकलीकरणका भी समावेश है।

॥ पथिक भयहर मन्त्र ॥

ॐ नमो अरिहन्ताण नाभौ, ॐ नमो सिद्धाण हृदये, ॐ नमो आयरियाण कण्ठे, ॐ नमो उवज्झायाणं मुखे, ॐ नमो लोए सव्व-साहूण मस्तके, सर्वाङ्गेषु अम्हं रक्ष रक्ष हिलि हिलि मातङ्गिनी स्वाहा ॥ रक्ष रक्ष ॐ नमो अरिहन्ताण आदि ॐ नमो मोहिणी मोहिणी मोहय मोहय स्वाहा ॥३६॥

इस मन्त्रको साध्य करे और मार्गमें चलते समय

विकट पंथमें या निजगृहमें अथवा अन्यत्र चोरादि उपद्रव उत्पन्न हुवा हो उस समयमे इस मंत्रका जाप करनेसे उपद्रव शान्त हो जाता है और भय चला जाता है। इस मंत्रमें शक्ति तो इतनी है कि चोरादिका स्तम्भन हो जाता है, किन्तु ध्याता पुरुषका पराक्रम हो तब इतनी सिद्धि तक पहुंच सकते हैं। सम्भव है श्री जम्बूस्वामीने इसी मंत्रका उपयोग किया हो ज्ञानीगम्य है।

॥ मोहिनी मंत्र ॥

ॐ नमो अरिहन्ताणं, अरे अरिणि मोहिणि, अमुकं मोहय मोहय स्वाहा ॥३७॥

इस मंत्रको साध्य करते समय षटक्रिया करके अमुकके नाम सहित जाप करे और प्रत्येक मंत्र सफेद पुष्प हाथमें लेकर बोलता जाय और सामनेके आलम्बन पर चढाता जाय तो मोहिनि मंत्र सिद्ध होता है षटक्रिया गुरुगमसे जानना चाहिए।

॥ दुष्ट स्तम्भन मंत्र ॥

ॐ ह्रीँ अ. सि. आ. उ. सा सर्वदुष्टान

स्तम्भय स्तम्भय, मोहय मोहय, अंधय अंधय,

मुकय मुकय, कुरु कुरु ह्रीँ दुष्टान् ठः ठः ठः ॥३८॥

इस मंत्रकी साधना करते समय प्रातःकाल मध्याह्न और सन्ध्या समय जाप करना चाहिए पूर्व दिशाकी तरफ मुख रखना, और उत्तर क्रिया करें; तब ग्यारहसो जाप करनेसे सिद्धि होती है, इसकी साधनामें "दलदारभ्यासुमुवे" आदि क्रियाएं करना चाहिए सो गुरुगमसे ज्ञात करना।

॥ व्यन्तर पराजय मंत्र ॥

उपर बताया हुवा नम्बर ३८ वाले मंत्रके प्रभावसे व्यन्तरका उपद्रव किसी मकानमें महल्लमें या मनुष्य स्त्री आदिमें हो तो केवल ग्यारहसो जाप विधि सहित करनेसे उपद्रव मिट जाता है। इसकी साधनामें ईशानकुणमें मुख रखना चाहिए और आठ रात्रि तक आधीरातके समय साधन करे तो व्यन्तरादिका भय मिट जाता है।

॥ जीव रक्षा मंत्र ॥

ॐ नमो अरिहन्ताणं, ॐ नमो सिद्धाणं,

ॐ नमो आयरियाणं, ॐ नमो उवज्झायाणं, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं झुलु झुलु कुलु कुलु चुलु चुलु मुलु स्वाहा ॥४०॥

इस मंत्रका आराधन जीवदया, जीवरक्षा, वंदीवानको मुक्त करानेके हेतुसे करना चाहिए साधन करते समय थालीमें या पट्ट पर जो सप्तधातुकी हो या ताम्बेकी हो उस पर अष्टगन्धसे मंत्रको लिखे सवालाख जाप करे, जब जाप पुरे हो जाय तब सिद्धिक्रियामें बलिकर्म अर्चनादिका विधान बराबर करे तो देव सहायक होते हैं, और जीवरक्षाके समय अमुक संख्यामें जाप करनेसे विजय होता है।

॥ सम्पत्ति प्रदान मंत्र ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अ. सि. आ. उ.सा. चुलु चुलु झुलु झुलु कुलु कुलु मुलु मुलु इच्छियं मे कुरु कुरु स्वाहा ॥४१॥

इस मंत्रका चोवीसहजार जाप करना चाहिए, विधि सहित जाप हो जाने बाद उत्तर क्रिया करना और बादमें एक माला नित्य फेरते रहना सर्व प्रकारकी सम्पत्तिका लाभ होगा।

॥ सरस्वती मंत्र ॥

ॐ अ' सि. आ. उ. सा नमोर्ह वाचिनी, सत्यवाचिनी वाग्वादिनी वद वद मम वाचया, ह्रीं सत्य ब्रुहि सत्य ब्रुहि सत्य वद सत्य वद अस्खलितप्रचार त देव मनुजासुरसहसी ह्रीं अर्हं अ. सि. आ. उ. सा. नमः स्वाहा ॥४२॥

यह मंत्र सरस्वती देवीकी आराधनाका है इस मंत्र द्वारा श्रीमान् बप्पभट्टसूरिजी महाराजने सरस्वती देवीको प्रसन्न की थीं, इस मंत्रका एक लाख जाप करनेसे सिद्ध होता है।

॥ शांति दाता मंत्र ॥

ॐ अर्हं अ. सि. आ. उ. सा. नमः ॥४३॥

इस मंत्रका नित्य स्मरण करनेसे शान्ति होती है गृह कलह आदिका नाश होता है, और सम्पत्ति आती है।

॥ मंगल मंत्र ॥

ॐ अ. सि आ. उ. सा. नमः ॥४४॥

यह मंत्र तुष्टि पुष्टि देता है नित्य स्मरण करनेसे सुख मिलता है।

॥ वस्तु विक्रय मंत्र ॥

नट्ठट्ठमयट्ठाणे पणट्ठ कम्मट्ठनट्ठसंसारे।
परमट्ठनिट्ठियट्ठे अट्ठगुणाधीसरे वंदे ॥४५॥

इस मंत्रकी साधना स्मशानभूमिमें कृष्णपक्षकी चतुर्दशीके दिन करते हैं। सन्ध्याकालके वाद डेढ़-प्रहर रात्रि गये आरम्भ करे। धूप दीप जयणा सहित रक्खे, और कटपत्र तेल गुगल आदिका होम जयणा सहित करे, प्रतिदिन दोहजार जाप कर सिद्धि प्राप्त करे वादमें जिस वस्तुको वेचना हो तब इक्कीस जापसे मंत्रितकर विक्रय करे तो अच्छा मूल्य आवेगा।

॥ सर्व भय रक्षा मंत्र ॥

ॐ अर्हते उत्पत उत्पत स्वाहा त्रिभुवन-स्वामिनी, ॐ थम्भेइ जलजलणादि घोरुवसग्गं मम अमुकस्य अवाय णासेउ स्वाहा ॥४६॥

इस मंत्रको लिखनेके लिए चन्दन या अष्टगंध आदि सामग्री तैयार करके एक वाजोटपर रखना और धूप दीप जयणा सहित रख कर एक माला

श्रीनवकार मंत्रकी फेरनेके बाद मंत्रको लिखना, लिखे बाद पट्टकी पूजन-अर्चन सुगन्धी पदार्थ व पुष्पादिसे करके मंत्र सिद्ध करना और भय उपस्थित हो तब अमुक जाप किया जाय तो भय नष्ट हो जाता है।

॥ तस्कर स्थम्भन मंत्र ॥

ॐ नमो अरिहन्ताण, धणु धणु महाधणुं महाधणु स्वाहा ॥४७॥

इस मंत्रका ध्यान ललाटमें चित्तको स्थिर करके करनेसे महालाभ होता है, और इसीके प्रतापसे चोर स्तम्भन हो जाते हैं, और इसी मंत्रको पटीक्रिया करते लिखता जाय और बाये हाथसे लिखे हुवेको मिटाकर मुष्टि बंध करता जाय इस तरहसे अमुक संख्यामें लिखे बाद मुष्टि बंध कर जाप करे-जाप पूर्ण होते ही मुष्टिको खोल कर दिशामें फेकने जैसा हाथ लम्बा करे तो चोरादि भय नही हो पाता और दृष्टिगत भी नही होंगे।

॥ शुभाशुभ दर्शन मंत्र ॥

ॐ ह्रीँ अर्हँ नमः क्ष्वीँ स्वाहा ॥४८॥

इस मंत्रका जाप करनेसे पहले निजके हाथोंको चन्दनसे लिप्त कर लेवे बादमे एक माला जितना जाप कर मौनपने भुमिशय्या पर सो जावे तो स्वप्नमें शुभाशुभका भास होता है।

॥ प्रश्नोत्तर विजय मंत्र ॥

ॐ नमो भगवइ सुयदेवयाए सव्वसुय-मायाए बारसंगपवयणजणणीएसरस्सइए सव्व-वायणिसुवव्व अवतर अवतर देवी मम सरीरं पविस पुच्छंतस्स पविस्स सव्वजणमयहरिए अरिहन्तासिरिए स्वाहा ॥४२॥

इस मंत्रकी साधना करनेके बाद प्रश्नोत्तरका कार्य हो तब या किसी मुकद्दमेके समय सवाल जवाब करनेसे पहले अमुक संख्यामें इस मंत्रका जाप कर लेनेसे विजय प्राप्त होगा और हर्ष उत्पन्न होगा।

॥ सर्वरक्षा मंत्र ॥

ॐ नमो अरिहन्ताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरियाणं, ॐ नमो उवज्झायाणं, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पञ्चनमुक्कारो, सव्व-

पावप्पणासणो, मङ्गलाण च सव्वेसिं, पढम हवइ मङ्गलम्, ॐ ह्रीं हुँ फट् स्वाहा ॥५०॥

इस मत्रका स्मरण हरएक कार्यमें सुखदाई होता है। नित्यप्रति इस मत्रका ध्यान खूब करना चाहिए सर्व प्रकारसे आनन्द मङ्गल करने वाला यह मत्र है।

॥ द्रव्यप्राप्ति मत्र ॥

ॐ ह्रीं अरिहन्ताण सिद्धाण आयरियाण उवज्झायाण साहूण मम ऋद्धि वृद्धि समीहित कुरु कुरु स्वाहा ॥५१॥

इस मत्रको नित्य प्रति प्रातःकाल मध्याह्न और सायकालको प्रत्येक समयमे बत्तीसवार स्मरण-ध्यान करे तो सर्व प्रकारकी सिद्धि होकर धन लाभ होता है और हर तरहसे कल्याण होगा।

॥ ग्रामप्रवेश मत्र ॥

ॐ नमो अरिहन्ताण नमो भगवइए चन्दाइए महाविज्जाए सत्ताइए गिरे गिरे हुलु हुलु चुलु चुलु मयूरवाहिनिए स्वाहा ॥५२॥

इस मत्रका जाप पोसकृष्णा दशमीके दिन उप-

वास करके करना चाहिए, कमसे कम एकसौ वार तो अवश्य करे और उत्तर क्रिया कर सिद्ध कर लेवे बादमें ग्राममें प्रवेश करते समय इस मंत्रका सातवार जाप करके जिस तरफका स्वर चलता हो वही पांव पहले उठाकर ग्राम प्रवेश करे तो लाभ प्राप्त होता है, साधु मुनिराज स्मरण करें तो लाभ व सन्मान होता है, हर तरहसे आनन्द होगा।

॥ शुभाशुभ ज्ञानाति मंत्र ॥

ॐ नमो अरिह० ॐ भगवओ बाहुबलीस्स य इह समणस्स अमले विमले निम्मलनाणपयासिणि ॐ नमो सव्वभासइ अरिहा सव्वभासइ केवली एएणं सव्ववयणेणं सव्व होउ मे स्वाहा ॥५३॥

इस मंत्रका ध्यान कायोत्सर्गमुद्रामें खडे रह कर करे और ध्यान पूरा हो जावे तब भूमिसंथारे सो जावे तो स्वप्नमें शुभाशुभका भास होता है। जाप ऐसे समयमें करना चाहिए कि पूरा होते ही सो जाने से निद्रा जल्दी आ जावे और जाग्रत अवस्थामें दूसरी बातोंका चिंतवन नही हो।

॥ विवादे विजय मंत्र ॥

ॐ हुँ सः ॐ ह्रीँ अर्हँ ऐँ श्रीँ अ. सि. आ. उ. सा नमः ॥५४॥

विवाद करते समय उपरोक्त मंत्रका इक्कीस वार मनमें-मौनपने जाप करके विवाद शुरु करे तो विजय प्राप्त होगा।

॥ उपवास फल मंत्र ॥

ॐ नमो ॐ अर्हँ अ. सि आ. उ. सा णमो अरिहन्ताण नमः ॥५५॥

इस मंत्रका एकसौ आठ वार स्मरण करनेसे उपवासके फल जितना लाभ प्राप्त होता है।

॥ अग्निभय मंत्र ॥

उपर बताए हुवे मंत्र नम्बर ५५ को सिद्धि करनेके बाद २१ दफा मंत्र द्वारा पानीको मंत्रित करके अग्निका उपद्रव हुआ हो उस समय तीन अञ्जलीसे या अग्निवेष्टित जलधारा देवे तो आगका उपद्रव शान्त हो जाता है ॥५६॥

॥ सर्पभयहर मंत्र ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ. सि. आ. उ. सा. अनाहत विजये अर्हं नमः ॥८७॥

इस मंत्रकी साधना करे तब प्रतिदिन सुबह, दोपहरको और सायंकालको स्मरण करे और प्रत्येक दीवालीके दिन १०८ जाप करे तो यावज्जीव सर्पका भय नही होगा।

॥ लक्ष्मीप्राप्ति मंत्र ॥

ॐ ह्रीं ह्रँ णमो अरिहन्ताणं ह्रौं नमः ॥८८॥

इस मंत्रका नित्यप्रति एकसौ आठ जाप करनेसे लक्ष्मी प्राप्त होती है सुख मिलता है और द्रव्य आता है।

॥ कार्यसिद्धि मंत्र ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्लौं ब्लूँ अर्हं नमः ॥८९॥

इस मंत्रके जापसे सर्व कार्यकी सिद्धि होती है, साधन करते समय इक्कीस हजार जाप करना चाहिए बादमें एक माला नित्य गिनना चाहिए।

॥ शत्रुभयहर मंत्र ॥

ॐ ह्रीं श्रीं अमुक दुष्ट साधय साधय अ. सि. आ. उ. सा. नमः ॥६०॥

इस मंत्रकी इक्कीस दिन तक प्रातःकालमें माला फेरे और उत्तर क्रियाके बाद जब काम हो उस समय अमुक संख्यामें जाप करे तो शत्रुका भय नष्ट होता है, आपत्ति व क्लेशका नाश होता है।

॥ रोग.क्षय मंत्र ॥

ॐ नमो सव्वोसहिपत्ताण, ॐ नमो खेलोसहिपत्ताण, ॐ नमो जल्लोसहिपत्ताण, ॐ नमो सव्वोसहिपत्ताण स्वाहा ॥६१॥

इस मंत्रके जापसे रोग पीडा मिटती है, व्याधि दिन दिन कम होगी एक माला सवेरेही फेरना चाहिए।

॥ व्रणहर मंत्र ॥

ॐ णमो जिणाण जावयाण पुन्नोणि अ ण्एणि सव्वायेण वगमापच उमाजुप उमाफुट् ॐ ॐ ठः ठः स्वाहा ॥६२॥

उपरोक्त मंत्रसे राख मंत्रित कर व्रण-जिनको वण भी कहते हैं बालकोंके शरीर पर हो जाते हैं उन पर अथवा शीतलाके वण पर लगावे तो वण मिट जाते हैं।

॥ सूर्यमङ्गलपीडा मंत्र ॥

ॐ नमो सिद्धाणं ॥६३॥

सूरज व मंगलकी दिशा पीडाकारी हो तब उपरोक्त मंत्रका जाप एक हजार रोजाना जहां तक ग्रहपीडा रहे किया करे तो सुख प्राप्त होता है।

॥ चन्द्रशुक्रपीडा मंत्र ॥

ॐ ह्रीं नमो अरिहन्ताणं ॥६४॥

चन्द्रमा और शुक्र दोनोंकी दृष्टि पीडाकारी हो तब एक हजार जाप प्रतिदिन करनेसे सुख प्राप्त होता है।

॥ बुधपीडा मंत्र ॥

ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं ॥६५॥

बुधकी दशा हानिकारक हो तब प्रसन्न करनेके लिए इस मंत्रका जाप एक हजार नित्य करना चाहिए।

॥ गुरुपीडा मंत्र ॥

ॐ ह्रीँ नमो आयरियाण ॥६६॥

गुरुकी दृष्टि हानिकारक हो तव इस मंत्रका जाप एक हजार रोजाना करना चाहिए।

॥ शनि राहु केतु पीडा मंत्र ॥

ॐ ह्रीँ नमो लोए सव्वसाहूण ॥६७॥

इस मंत्रका नित्य एक सहस्र जाप करनेसे शनिश्चर राहू केतुकी दृष्टि हानिकर हो तो मिट जाती है और सुख मिलता है।

॥ चतुराक्षरी मंत्र ॥

"अरहन्त" को चतुराक्षरी मंत्र कहते हैं इसका चारसौ बार जाप करे तो लाभ दाई होता है॥

॥ पञ्चाक्षरी मंत्र ॥

"अ. सि आ. उ. सा." इसका पांचसौ बार जप करे तो अति उत्तम है।

॥ षडाक्षरी मंत्र ॥

"अरिहन्त सिद्ध" इस मंत्रका तीनसौ बार जाप करे। तो उत्तम है।

॥ सप्ताक्षरी मंत्र ॥

ॐ श्रीँ ह्रीँ अर्हँ नमः

इस मंत्रका जाप वहुत ही कल्याणकारी है सर्व ज्ञान प्रकाशक सर्वज्ञ समान यह मंत्र है।

॥ पन्द्राक्षरी मंत्र ॥

ॐ अरिहन्त सिद्ध सयोगी केवली स्वाहा ॥

इस मंत्रका ध्यान परम पदके देनेवाला है नित्य करना चाहिए।

॥ षोडाक्षरी मंत्र ॥

अरिहन्त सिद्ध आयरिय उवज्झाय साहू ॥

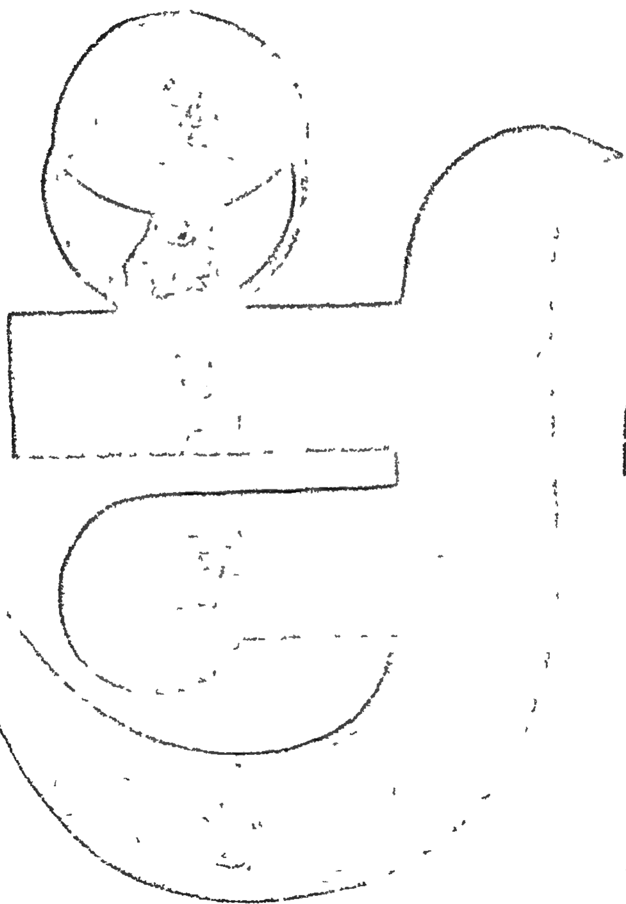
इस मंत्रको पञ्चपरमेष्टि व गुरु पञ्चकभी कहते हैं सोलह अक्षर होनेसे षोडाक्षरीके नामसे भी प्रसिद्ध है इसका जाप दो सौ वार करे तो उपवासका फल पाता है।

॥ पञ्च तत्त्व विद्या मंत्र ॥

अ. सि. आ. उ. सा. ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रौँ ह्रँः

इस मंत्रसे संसारके तमाम क्लेश दूर हो जाते हैं, इसको पंचतत्त्व विद्याका जाप कहते हैं।

ॐ एं पंचपरमेष्ठि स्थापना



पृष्ठ-७२

॥ चार शरण मगल मत्र ॥

अरिहन्त सिद्ध साहू केवलिपन्नतो धम्मो ॥

चार शरण, चार मगल चार लोकोत्तमका यह जाप है जिसका अव्यग्रमनसे जाप किया जाए तो कर्मक्षय हो जाते हैं।

प्रणवाक्षर ध्यान

प्रणव अक्षर ॐ को कहते हैं, मत्र सङ्कलनामें ऐसा मंत्र नहीं मिलेगा कि जिसमें ॐ का समावेश न हो यह मत्रका जीवन है प्राण है इसका ध्यान करनेके लिए शास्त्रमें बयान आता है कि हृदयकमलमें निवास करनेवाला शब्द जो ब्रह्मके कारण रूप स्वर व्यञ्जन सहित परमेष्टिपदका वाचक है और मस्तकमें रही हुई चन्द्रकलासे झरते हुए अमृतरससे भींजे हुवे महामंत्र प्रणव अर्थात् ॥ॐ॥ का कुम्भकसे चिंतवन करना, और स्तम्भन करनेमें पीला, वशीकरण करनेमें लाल, क्षोभ करनेमें परवालेकी कान्ति जैसा, विद्वेषमें काला और कर्मका घात करनेमें चन्द्रकी कान्ति जैसा ॐकारका ध्यान करना चाहिए। तीन

लोकको पवित्र करनेवाला पञ्चपरमेष्ठि नमस्कार मंत्रका निरन्तर चिन्तवन करना चाहिए योगी पुरुषोंको और भय भीरु आत्माके लिए तो यह रत्नचिन्तामणीके समान है, क्योंकि इसमें पञ्चपरमेष्ठिका समावेश है इसी लिए कहा है कि—

एष पञ्च नमस्कारः । सर्वपापप्रणाशनं ॥
मङ्गलानां च सर्वेषां । प्रथमं जयति मङ्गलम् ॥

पांच परमपदको नमस्कार करनेवालेके तमाम पापोंका क्षय हो जाता है, यह पद इसी लिए सर्व प्रकारके मङ्गलमें पहला मङ्गल माना गया है। यह महामंत्र है और यह मंत्रपद ॐकार दर्शक है अतः इस ॐ का जो ध्यान करता है उसको मनवाञ्छित फलकी प्राप्ति होती है, इस लिए ॐकार शब्द सूचक पञ्चपरमेष्ठिको नमस्कार करना कल्याणकारी है। इस पदका ध्यान करनेके लिए जो जो मार्ग बताए हैं उनमेंसे एक मार्ग यह भी है कि नाभिकमलमें स्थित ॥ अ ॥ आकार ध्यावे, ॥ सि ॥ सिवर्ण मस्तककमलमें स्थित ध्यावे, ॥ आ ॥ आकार मुखकमलमें स्थित कर ध्यावे, ॥ उ ॥ उकार हृदयकमलमें स्थित ध्यावे और

ह्रींमें चोवीस जिन स्थापना



पृष्ठ-८१

KRISHNA P RATANPOLE AHMEDABAD

॥सा॥ साकार कण्ठपिञ्जरमें स्थित कर ध्यावे तो यह जाप सर्व कल्याणके करने वाला है। अतः उपर बताए अनुसार अ. सि. आ उ. सा. यह पाचों बीजाक्षर हैं और इन पाचोंका ॐकार बनता है जो मनुष्य इनका ध्यान करते हैं उनको यह मत्र महान् कल्याणके करनेवाला होगा इसी लिए कहा है कि–

ॐकार विन्दु सयुक्त, नित्य ध्यायन्ति योगिन ॥
कामद मोक्षद चैव, ॐकाराय नमो नम ॥

यह मत्र धर्म अर्थ काम और मोक्षके देने वाला है इसकी महिमा पारावार है यहा पर सक्षेप स्वरुप बताया है विशेष जाननेकी इच्छा वाले जिज्ञासुओंको चाहिए कि ज्ञानीयोंकी सेवाकर प्राप्त करे।

ह्रींकारका ध्यान



ध्यायेत्सिताब्ज वक्त्रान्तरष्टवर्गी दलाष्टको ॥
ॐ नमो अरिहन्ताणमिति वर्णानपिक्रमात् ॥१॥

मुखके अन्दर आठ कमलवाले श्वेत कमलका चिन्तवन करे और उसके आठों कमलमें अनुक्रमसे "ॐ नमो अरिहन्ताण" इन आठ अक्षरोंको स्थापन करे, और इनमें केसरा पक्तिको स्वरमय बनावे और

कर्णिकाको अमृतविन्दुसे विभूषित करे, उन कर्णिकाओंमेंसे चन्द्रविम्वसे गिरते हुवे मुखसे सञ्चारते हुवे प्रभामण्डलके मध्यमें विराजित चन्द्र जैसी कान्ति वाले माया वीज "ह्रीँ" का चिन्तवन करे, चिन्तवन करनेके वाद पत्रोंमें भ्रमण करते आकाशतलसे सञ्चारित मनकी मलीनताका नाश करते हुवे अमृतरससे झरते और तालुरन्ध्रसे निकलते हुवे भृकुटीके मध्यमें शोभायमान तीन लोकमें अचिन्त्य महात्म्यवाले—तेजोमयकी तरह अद्भुत ऐसे इस ह्रींकारका ध्यान किया जाय तो एकाग्रतासे लय लगानेवालेको वचन और मनका मेल दूर करने पर श्रुतज्ञानका प्रकाश होता है। इस प्रकार छे महिने तक अभ्यास करने वाला निजके मुखमेंसे निकलती हुई धूम्रकी शिखाको देखता है। इसी तरहसे एक वर्ष तक अभ्यास किया जाय तो मुखमेंसे निकलती हुई ज्वालाको देखता है, और ज्वाला देख लेनेके वाद संवेगवान होकर सर्वज्ञ सच्चिदान्द परमात्माके मुखकमलको देखता है। इतना देख लेनेके वाद सतत् अभ्यास करते करते अत्यन्त महात्म्यवाले कल्याणकारी अतिशय सहित

भामण्डलके मध्यमें विराजित साक्षात् सर्वज्ञ भगवानको देखता है, और उन सर्वज्ञके विषे मन स्थिर कर निश्चय युक्त लय लगाता रहे तो परिणामकी धारा ऐसी चढ जाती है कि उस मनुष्यके निकटवर्ती मोक्षके सुख उपस्थित हो जाते हैं, और वह परमपद प्राप्त करता है।

ह्रीं की महिमा अपरम्पार है, इसमें वर्णवार चोवीस जिनेश्वर भगवानकी स्थापना होती है, जो ध्यान करनेवालेके लिए आलम्बन रूप है, ह्रीं में अत्यन्त शक्तिका समावेश है, इसको मायाबीज कहते हैं मायाका अर्थ लीला या फैलाव होता है, अतः माया बीज अर्थात् अक्षरोंका यह बीज है जिसको बीजरूप सिद्ध करनेके लिए "ह" अक्षरको लिख कर इसके चिन्ह मुवाफिक टुकडे नम्बर चार कैंचीसे काट कर रखना फिर उन पाचों टुकडो से स्वर व्यञ्जन अक्षर बना सकते हैं, ह्रीं का जाप कितना लाभदाई है इसके लिए तो जो ज्ञानी गुरु महाराज इस विषयके अभ्यासी हो उनसे पूछना चाहिए यहा तो ममगानुसार किञ्चित स्वरूप बताया गया है।

ध्यान प्रकरण

श्रावकका कर्तव्य है कि प्रातःकालमें चार घडी शेष रात्रि रहे तब निद्रा त्याग कर नवकार मंत्रका जाप करे इस मंत्रका विधान बताते हुवे " व्यवहार भाष्य " सूत्रमे लिखा है कि सोते समय खराब स्वप्न आया हो रागभावसे या द्वेषभावसे आया हुवा स्वप्न अनिष्ट फलका सूचक हो तो उसको दूर करनेके लिए बिस्तरमेंसे उठते ही १०८ उच्छ्वास प्रमाण काउसग्ग करे, जिनको श्वासोश्वाससे काउसग्ग करनेका अभ्यास नही हो उसको चार लोगस्सका काउसग्ग करना चाहिए और श्वासोश्वाससे काउसग्ग करनेका अभ्यास करते रहना, जो मनुष्य बिस्तर पर ही या पलंग पर बैठे बैठे ही स्मरण करते हैं उनको चाहिए कि मनमें ही पञ्चपरमेष्टिका ध्यान किया करे, वचन उच्चार करके जो जाप करते हैं, उनको चाहिए कि बिस्तरका त्याग कर कपडे बदल कर जमीन पर आसन बिछा कर पूर्व या उत्तर दिशाकी तरफ मुंह करके नवकार मंत्रका ध्यान करनेके लिए बैठे। ध्यान खडे रहकर काउसग्गमुद्रासे या बैठे बैठे किसीभी तरहसे करें लेकिन

मन परिणामको स्थिर रखनेके लिए आखें वध कर ध्यान करे मनको साफ रखे ममता मायाका त्याग करे, समभाव आलम्बित हो विषयादि विलाससे विराम पाकर शान्तिके साथ ध्यान करे। जिन मनुष्योंको समभाव गुण प्राप्त नही हुवा है उनको ध्यान करते समय कई प्रकारकी विटम्बनाएँ उपस्थित हो जाती है, इस लिए समपरिणामी रहनेका अभ्यास करना चाहिए, क्योंकि समपरिणाम विना ध्यान नही होता और विना ध्यानके निष्कम्प समता नही आ सकती इस लिए समता गुणमें रमण करता हुवा ध्यान मग्न रहनेका प्रयत्न करना चाहिए। स्थान, शरीर, वस्त्र और उपकरण शुद्धिकी तरफ भी पूरा लक्ष रखना चाहिए, क्योंकि पवित्रतासे चित्त प्रसन्न रहता है, और साधना सिद्ध होती है। जो मनुष्य हृदयको पवित्र किए विना ध्यान करते हैं उन्हें सिद्धि नही होती। एक राजा महाराजा साहबको मकान पर बुलाए जाय तो घरकी सफाई और सजाई कितने दरजे की जाती है और पवित्रताकी तरफ कितना लक्ष दिया जाता है जो किसीसे छिपा हुवा नही है, तो तीनलोकके-नाथको हृदयमें प्रवेश करते समय

मनोवृत्ति कितनी निर्मल होना चाहिए जिसकी कल्पना पाठक खुदही कर सकते हैं।

जाप करने वाला मौन रह कर जाप करे तो विशेष फलदाई होता है, जो मौनपने जाप करते हुवे थकित हो जाते हैं उनको चाहिए कि जाप वन्धकर ध्यान करने लगें इसी तरह ध्यानसे थक जाने पर जाप और दोनोंसे थक जाने पर स्तोत्र पढे, ह्रस्व दीर्घका ध्यान रखते हुवे भावार्थ समझते जांय और जिस राग-रागिणी, छन्दादिमें स्तोत्र हों उसी रागमें मधुरी आवाजसे पाठ करे तो फलदाई होता है। प्रतिष्ठा कल्पपद्धतिमें श्रीपाद्लिप्तसूरि महाराजने लिखा है कि जाप तीन तरहके होते हैं, प्रथम मानसजाप दूसरा उपांशुजाप और तीसरा भाष्यजाप, जिसमें मानस जापका यह मतलव है कि मनहीमें स्थिरता पुर्वक स्थिरचित्तसे लय लगाता हुवा ध्यान करता रहे, इस तरहके जापको उत्तम कोटिमें माना गया है, जो शान्ति तुष्टि पुष्टिके देने वाला है।

दूसरा उपांशु जाप उसे कहते है कि पासमें वैठा

हो वह आवाज न सुन सके इस तरहसे अन्तर जल्प रुप मुहमेंही कण्ठसे या जीभसे जाप करता रहे। इस तरहका जापभी उत्तम माना गया है, जो पुष्टिके हेतु जाप करते हों उनको उपांशु विधानका उपयोग करना चाहिए।

तीसरा भाष्य जाप उसे कहते हैं कि स्पष्ट उच्चारसे पाठ करनेकी तरह बोलते जाय, ऐसे उच्चारवाले जाप आकर्षणादि कार्यमें उपयोगी होते है, अतः जैसी जिसकी भावना हो और कार्यका प्रसग हो तदनुसार लाभालाभ देख कर जाप करना चाहिए। इसी जापमें भ्रमर जापभी होता है जैसे दो भँवरे गुञ्जारव करते हों उस प्रकार कण्ठसे व नासिकासे मिलान करता हुवा जाप करे जो ऐसा जाप जम जाय और इसके भेदको समझ ले तो उस पुरुषकी जबान पर सिद्धि हो जाती है। इसी तरहसे नित्य जाप, नैमित्तकजाप, पर्वजाप, प्रदक्षिणाजाप, काम्य जाप, प्रायश्चितजाप आदि बहुतसे भेद है यहा इसका विस्तार करना नही चाहते उपर बताया हुवाही समझमें आ जाय तो कल्याण हो सकता है।

ध्याता पुरुषकी योग्यता

ध्यान करनेकी इच्छा रखनेवालोंको निजकी योग्यता बढाकर ध्याता ध्येय और ध्यानको अच्छी तरहसे समझ लेना चाहिए। क्योंकि इन भेदोंके समझे विना कार्य सिद्ध नही हो सकेगा। अतः करनेवालोंमें किस तरहके गुण होना चाहिए जिसका संक्षेपसे वर्णन करेंगे।

ध्यानी मनुष्य धैर्यता रखने वाला हो, शांत स्वभावी, सम परिणामी, और अत्यन्त संकट आजाने पर भी ध्यानको नही छोडे इस प्रकार अटल श्रद्धा-वाला होना चाहिए और सबकी तरफ समान भावसे देखनेवाला शीतताप आदिमें असह्य कष्टसे घबराता न हो और निजके स्वरुपसे भ्रष्ट न हो, क्रोध, मान, माया, लोभ आदिका त्याग करनेवाला, रागादिसे मुक्त, कामवासनासे विराम् पाया हुवा, निजके शरीर पर मोह उत्पन्न न हों इस तरहकी भावनासे संवेगरुपी द्रहमें मग्न होकर सर्वदा समताका आश्रय लेनेवाला, मेरुपर्वतकी तरह निष्कम्प, चन्द्रमाके

समान आनन्ददाता और वायुकी तरह सगरहित इस तरहका बुद्धिमान ध्यानमें निपुण ध्याता पुरुष हो उसीको ध्यान करनेकी योग्यता वाला समझना चाहिए। इस लिए ध्याता पुरुषको अपनी योग्यताकी तरफ पूरा लक्ष देना चाहिए, क्योंकि योग्यता प्राप्त किए बिना प्रवेश किया जाय तो कार्यकी सिद्धि असम्भव है। यतः—

क्षान्तो दान्तो निरारम्भ उपशान्तो जितेन्द्रिय ॥
मताराधको ज्ञेयो विपरीतो विराधक ॥१२५॥
"श्रीपालचरित्र"

पिण्डस्थ ध्येय स्वरूप

पिण्डस्थ च पदस्थ च रूपस्थ रूपवर्जित ॥
चतुर्धा ध्येयमाम्नात, ध्यानस्यालम्बन बुधै ॥
"योगशास्त्र"

ध्येयका स्वरूप बताते हुवे बयान किया है कि पिण्डस्थ, पदस्थ, रूपस्थ, और रूपातीत इन चार प्रकारके ध्येयको ध्यानके आलम्बन भूत मानना चाहिए। ध्येय शुद्ध करनेके बाद धारणाको समझना

जिसके पांच भेद बताए गए हैं। प्रथम पार्थिवी, दूसरी आग्नेयी, तीसरी मारुती, चोथी वारुणी, और पांचवीं तत्त्वभू, यह पांचों धारणाऐं पिण्डस्थ ध्यानमें होती है जिनका संक्षेप वर्णन इस प्रकार है।

प्रथम पार्थिवी धारण उसे कहते हैं कि तिर्यक् लोक जितने क्षीरसमुद्रका चिन्तवन करे और उसमें जम्बूद्वीप जितना एक हजार पांखडीवाला सुवर्ण जैसी कान्तिवाळे कमलका चिन्तवन करे, उस कमलकी केसरापंक्तिमें प्रकाशमान प्रभावशाली मेरु जितनी पीळे रंगकी कर्णिकाका चिन्तवन करे, उसके उपर श्वेत सिंहासन पर विराजमान निजकी आत्माका चिन्तवन करे, और कर्म निर्मूल करनेके लिए प्रयत्नशील होकर कर्मक्षयका चिंतवन करे उसको पार्थवी धारणा कहते हैं।

दूसरी आग्नेयी धारणाका स्वरुप इस तरह है कि नाभिके अन्दर सोलह पांखडीवाले कमल पुष्पकी योजना करे, और उस कमलकी कर्णिकाओंमें "अर्हँ" महामंत्रको और दुसरे प्रत्येक पत्रमें स्वरकी पंक्ति स्थापन करे, रेफ विन्दुको कला सहित महामंत्रमें जो

"र्हूँ" अक्षर है उसके रेफमेंसे धीरे-धीरे निकलती हुई धूम्ररेखाका चिन्तवन करे, उसमें अग्नि कणकी सन्तति अर्थात् चिनगारिया चिन्तवन करके बादमें अनेक ज्वालाका चिन्तवन करना और उस ज्वालाके समूहसे हृदयमें रहे हुवे कमलको जलाना, इस तरहसे घाती अघाती आठो कर्मकी रचनावाले आठ पत्र सहित अधो मुखवाले कमलको महामत्रके ध्यानसे उत्पन्न होनेवाली ज्वाला जला देती है। इस तरहसे चिन्तवन करनेके बाद शरीरसे बाहर सलगती हुई अग्निका त्रिकोण अग्निकुण्ड चिन्तवनकर उसके अतमें स्वस्तिक लाञ्छित अग्नि बीजयुक्त चिन्तवन करे। इस तरहके महामत्रके ध्यानसे उत्पन्नकी हुई अग्निसे अर्थात् अग्निज्वालामे शरीर और कमलको जलाकर भस्मसात् कर शान्त होना इसीका नाम आग्नेयी धारणा है जो ध्यानद्वारा चिन्तवनकी जाती है।

तीसरी मारुती धारणाका स्वरूप इस प्रकार है कि तीनभुवनके विस्तार जैसा पर्वतादिको चलायमान करनेवाला, समुद्रको क्षोभ प्राप्त कराने वाले, वायुका चितवन करना और भस्मरजको उस वायुसे शीघ्र

और कर्णिका सहित कमलमें पच्चीस वर्ण अनुक्रमसे अर्थात् क. ख. ग. घ. ङ, च. छ. ज. झ. ञ, ट. ठ. ड. ढ. ण, त. थ. द. ध. न, प. फ. व. भ. म, तक चिन्तवन करना। इतना करनेके वाद मुखकमलमें आठपत्रवाले कमलका चिंतवन कर उसके अन्दर वाकीके आठ वर्ण य. र. ल. व. श. ष. स. ह, का चिन्तवन करना। इस प्रकार चिन्तवन करनेसे श्रुत पारगामी हो जाते हैं। इस क्रियाका विस्तरित विधि-विधान समझने योग्य है। जो मनुष्य इसका ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं, और अनादि सिद्धि वर्णात्मक ध्यान यथाविधि करते रहते हैं उन पुरुषोंको अल्प समयमें ही गया, आया, हुवा, होनेवाला, जीवन, मरण, शुभ, अशुभ, आदि वृत्तान्त मालूम हो जानेका ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

नाभिकन्दके नीचे आठ वर्गके, अ, क, च, ट, त, प, य, श, अक्षरवाले आठ पत्तों सहित स्वरकी पंक्ति युक्त केसरा सहित मनोहर आठ पांखडीवाला कमल चिन्तवन करे। सर्व पत्रोंके अग्रभागको प्रणवाक्षर व मायावीज ॥ ॐ ह्रीँ ॥ से पवित्र वनाना।

उन कमलके मध्यमें रेफसे (ॅ) आक्रान्त कलाविन्दु (ँ) से रम्य स्फटिक जैसा निर्मल आद्यवर्ण ॥ अ ॥ सहित और अन्त्यवर्णाक्षर ॥ह॥ स्थापन करना जिससे "अर्हँ" बनता है, और यह पद प्राण प्रान्तके स्पर्श करनेवालेको पवित्र करता हुवा ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत, सूक्ष्म, और अति सूक्ष्म जैसा उच्चारण होगा। उसके बाद नाभिकी, कण्ठकी और हृदयकी घटिकादि ग्रन्थियोंको अति सूक्ष्म ध्वनिसे विदाहरण करता हुवा, मध्य मार्गसे वहन करता हुआ चिन्तव करना, और विन्दुमेंसे तप्तकला द्वारा निकलते दूध जैसे सफेद अमृतके कल्लोलोंसे अन्तरआत्माको भीञ्जता हुवा चिन्तवनकर, अमृत सरोवरमें उत्पन्न होनेवाले सोलह पाखडीके सोलह स्वरवाले कमलके मध्यमें आत्माको स्थापन कर उसमें सोलह विद्यादेवियोंकी स्थापना करना।

देदिप्यमान स्फटिकके कुम्भमेंसे झरते हुवे दूध जैसे सफेद अमृतसे निजको लम्बे समयसे सिञ्चन होता हो ऐसा चिन्तवन करना, और मन्त्राधिराजके अभिधेय स्फटिक जैसे निर्मल परमेष्टि अर्हन्तका

मस्तकमें ध्यान करना और ऐसे ध्यानके आवेशसे "सोऽहं, सोऽहं" वारम्वार वोलनेसे निश्चयरुपसें आत्माकी परमात्माके साथ तन्मयता हो जाती है। इस तरहसे तन्मयता हो जानेके वाद अरागी, अद्वेषी, अमोही, सर्वदर्शी, देवताओंसेभी पूजनीय ऐसे सच्चिदानन्द परमात्मा समवसरणमें विराजमान होकर धर्मदेशना दे रहे हों, ऐसी अवस्थाका चिंतवन करके आत्माको परमात्माके साथ अभिन्नतापूर्वक चिन्तवन करना चाहिए, जिससे ध्यानी पुरुष कर्मरहित होकर परमात्मपद पाता है।

बुद्धिमान ध्यानी योगी पुरुषको चाहिए कि मंत्राधिपके उपर व नीचे रेफ सहित कला और विन्दुसे दवाया हुवा--अनाहत सहित सुवर्णकमलके मध्यमें विराजित गाढ चन्द्र किरणो जैसे निर्मल आकाशसे सञ्चार कर दश दिशाओंको व्याप्त करता हो इस प्रकार चिन्तवन करना। वादमें मुखकमलमें प्रवेश करता हुवा, भ्रकुटीमें भ्रमण करता हुवा, नेत्रपत्रोंमें स्फुरायमान, भाल मण्डलमें स्थिररुप निवास करता हुवा, तालूके छिद्रमेसे अमृतरस झरता हो और

चन्द्रमाके साथ स्पर्धा करता हुवा ज्योतिषमण्डलमें स्फुरायमान, आकाश मण्डलमें सञ्चार करता हुवा, मोक्षलक्ष्मीके साथमें सम्मिलित सर्व अवयवादिसे पूर्ण मन्त्राधिराजको कुम्भकसे चिन्तवन करना चाहिए, जिसका विशेष स्पष्टीकरण करते कहा है कि ॥ अ ॥ जिसके आद्यमें है और ॥ ह ॥ जिसके अन्तमें है, और बिन्दु सहित रेफ जिसके मध्यमें है, जिसके मिलानसे ॥ अर्हं ॥ बनता है, यही परम तत्त्व है और इसको जो जानते है वही तत्त्वज्ञ है।

ध्यानी पुरुष या योगी महात्मा स्थिर चित्तसे लय लगाते हुवे इस महातत्त्वका ध्यान करते है तो फल स्वरुप आनन्द और सम्पत्तिकी भूमिरुप मोक्ष-लक्ष्मी उनके पास आकर खडी हो जाती है।

जो मनुष्य केवल रेफ बिन्दु और कलारहित शुभ्राक्षर ॥ ह ॥ का ध्यान करते है, उन महापुरुषको यही अक्षर अनक्षरताको प्राप्त हो जाता है जो बोलनेमें नही आता इस तरहसे ध्यान लगावे, और चन्द्रमाकी कला जैसे सूक्ष्म आकारवाले सूर्य जैसे प्रकाशमान अनाहत नामके देवको स्फुरायमान होता

हो इस प्रकार चिन्तवन करना। और वादमें अनुक्रमसे केशके अग्रभाग जैसा सूक्ष्म चिन्तवन करना और क्षणवार जगतको अव्यक्त ज्योतिवाला चिन्तवन करना, इस तरह करके लक्षसे मनको हटाया जाय तो अलक्षमें स्थिर करते हुवे अनुक्रमसे अक्षय इन्द्रियोंसे अगोचर ऐसी ज्योति प्रगट होती है। इस प्रकार लक्षके आलम्बनसे अलक्ष्य भाव प्रकाशित किया हो तो उससे निश्चल मनवाले योगी महात्मा व ध्यानी पुरुषका इच्छित सिद्ध होता है।

योगशास्त्रमें बयान आता है कि, ध्यान करते समय आठ पांखडीके कमलका चिन्तवन करे और उसके मूलमें सप्ताक्षरी मंत्र "नमो अरिहन्ताणं" का ध्यान करे बादमें सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधूपदको अनुक्रमसे चारों दिशाके कमलपत्ते-पांखडीमें स्थापित करे और चारों विदिशा चूलिकामें चारोंपद ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तपकी स्थापना कर ध्यानकी लय लगावे तो महान् लाभ प्राप्त होता है। इस तरहसे आराधना करनेवाले परम पुरुष महान् लक्ष्मी प्राप्त करके तीनलोकके पूजनीय हो जाते हैं।

आगे ऐसा बयान आता है कि, चन्द्रके बिंबसे उत्पन्न हुई हो और उसमेंसे नित्य अमृत झरता हो इस तरहसे कल्याणके कारणरुप भालस्थलमें (कपाल) रही हुई ॥ क्ष्वीँ ॥ नामकी विद्याका ध्यान करना । क्षीर-समुद्रमेंसे निकलती हुई, अमृत जलसे भींजती हुई, मोक्षरूपी महलमें जानेके लिए नीसरणीरुप शशिकलाको ललाटके अन्दर चिन्तवन करना । इस विद्याके स्मरण मात्रसे संसारमें परिभ्रमण करनेवाले कर्म क्षय हो जाते हैं, और परमानन्दसे कारणरुप अव्ययपदको पाता है ।

नासिकाके अग्र भाग पर प्रणव ॥ॐ॥ शून्य (०) और अनाहत (ह) इन तीनोंका ध्यान करनेवाला आठ प्रकारकी सिद्धिया प्राप्त कर लेता है, जिनके नाम इस प्रकार हैं, (१) अणीमा सिद्धि, (२) महिमा सिद्धि, (३) लघीमा सिद्धि, (४) गरिमा सिद्धि, (५) प्राप्तशक्ति सिद्धि, (६) प्राकम्य सिद्धि, (७) इशित्त्व सिद्धि, और (८) वाशित्त्व सिद्धि, जिसका बयान विस्तारसे षट्पुरुषचरित्रके प्रथम सर्गमें श्लोक ८५२ से ८५९ तक किया है जिज्ञासुओंको देखना चाहिए।

इस प्रकारसे सिद्धियां प्राप्त करनेवाला निर्मल ज्ञान पाता है, और ॐ व अनाहत. ह. का ध्यान करने वालेको तमाम विषयके ज्ञानमें प्रगल्भता प्राप्त होती है।

इसी ध्यानमें अहम्लीकार मंत्रका ध्यानभी वहुत उपयोगी बताया है जो इस तरह पर है।

ह्रीँ. ॐ. ॐ. स. ह्म्लीँ. हँ. ॐ. ॐ. ह्रीँ.

इस मंत्रकी अद्भुत माया है, इसका विवरण करते विशेष खुलासा किया है कि दोनों तरफ दो दो ॐकार और अन्तके भागमें मायावीज ह्रीँ से वेष्टित करे मध्यमें "सोऽहं" और सिरपर "वि" इस तरहके अहम्लीँकारका चिन्तवन करना यह मंत्र गणधर महाराज भाषित है और निरवद्य विद्या है जो कामधेनुकी तरह अचिन्त्य फलके देनेवाली व कल्याणकारी है।

इसी ध्यानमें षटकोणका एक चक्र बनाया जाय जिसके प्रत्येक कोणमें "फट्" स्थापन करना, और दाहिनी तरफ बाहरके भागमें "विचक्राय" स्थापन करना बाई तरफ "स्वाहा" स्थापन कर चिन्तवन

करे, और बाहरके भागमें । ॐ पूर्व नमो जिणाणं वेष्टित करलेवे और फिर ध्यानकी लय लगावे तो आनन्द मगल होता है ।

उपरोक्त अष्टाक्षरी मत्रके लिए ऐसा भी बयान आता है कि आठ पत्रवाले कमलके अन्दर तेजोमय आत्माका ध्यान करना, और ॐकारपूर्वक आद्यमत्रके वर्ण अनुक्रमसे पत्रमें स्थापित करना, पहला पत्र पूर्वदिशाकी तरफका समझना और इसी तरह आठों पत्रोंमें दिशा विदिशाकी तरफ आठ वर्ण स्थापित कर ग्यारहसौ बार इस अष्टाक्षरी मत्रका ध्यान करे, और जिस कार्यके लिए प्रयत्न हो उसका सकल्प कर आठ दिन तक जाप करे, बादमें आठ रात्रि व्यतीत होनेके बाद जाप करते करते कमलके अन्दर आठ पत्रोंमें आठ वर्ण अनुक्रमसे दृष्टिगत होंगे । और इनको देखे बाद ऐसी सिद्धि प्राप्त हो जाती है कि भयङ्कर सिंह, हाथी, सर्प, राक्षस, व्यन्तर आदिभी क्षणवारमें शान्त हो जाते है और किसी प्रकारकी पीडा नही करते उनके पासमें बैठ जाते है, और आसपास फिरने लगते हैं ।

इसी ध्यानमें पापोंके बंधका क्षय करनेके लिए पापभक्षणी विद्या इस तरह बताई गई है।

ॐ अर्हँ मुखकमल वासिनि पापात्मक्षयंकरि, श्रुतज्ञानज्वालासहस्रप्रज्वलिते हे सरस्वति मत्पापं हन, हन, दह, दह क्षाँ क्षीँ क्षूँ क्षौं क्षः क्षीरधवले अमृतसम्भवे वं वं हुँ हुँ स्वाहा ॥

इस पाप भक्षणी विद्याका स्मरण करने वालेका इसके अतिशयसे या प्रभावसे चित्त प्रसन्न होता है, पाप-कालुष्य दूर हो जाता है, और ज्ञानरूप दीपकका प्रकाश होता है। ऐसा यह महाचमत्कारी मोक्ष-लक्ष्मीका बीजभूत मंत्र जो कि विद्याप्रवाद नामके दशवें पूर्वमेंसे उद्धृत किया हुवा है, जिसके ध्यानसे जन्म जरा मृत्युरुप दावानल शान्त हो जाता है और इस ध्यानके बहुतसे भेद हैं जिज्ञासुओंको ज्ञानी ध्यानी पुरुषोंकी सेवा कर प्राप्त करना चाहिए।

रुपस्थ ध्येय स्वरुप

जिन महान् पुरुषके सामने मोक्षलक्ष्मी तैयार

है, और सर्व प्रकारके कर्मका नाश करनेमें जो समर्थ हैं, जिनके चारो ओरसे मुखके दर्शन होते हैं, तीन-लोकके जीवोंको अभयदान देनेकी शक्तिवाले, तीन-मण्डल जैसे तीन श्वेत छत्र सहित शोभायमान, जिनके पीछे सूर्यको भी विटम्बना करता हुवा भामण्डल झगझगाट कर रहा है, जहा पर दिव्य देवदुन्दुभिके सुहावने नाद-गीतगानके साम्राज्य-सम्पतिवाले, भ्रमर शब्दोके झङ्कारसे वाचाल अशोक वृक्षके शोभायमान समोसरणमें सिंहासन पर विराजमान हैं, जिनके उपर चँवर ढल रहे हैं, सुरासुर नमस्कार करते हैं, रत्नजडित मुकुट कुण्डलकी क्रान्तिसे नमस्कार-चरण-वन्दनके समय पावके नखकी दीप्त कान्तिवाले, दिव्य पुष्प समूहसे व्याप्त विशाल परिषद भूमि जहा विद्यमान है, इस तरहका सुन्दर, रमणीय, सुहावना स्थान है, जहा पर मृग, सिंह, गाय, आदि तिर्यञ्च-हिन्सक प्राणी भी निजके स्वभाविक जातिवैर भावको छोडकर समवसरणमें बैठते हैं ऐसे अतिशय वाले केवलज्ञानसे प्रकाशमान अरिहन्त भगवन्तके रूपका आलम्बन लेकर ध्यान करना उसीको रुपस्थ ध्यान कहते हैं।

राग, द्वेष और मोहादि विकारोंसे अकलङ्कित शान्त, कान्त, मनोहर सर्वगुणसम्पन्न सुन्दर योगमुद्रा- वाले जिनके दर्शन मात्रसे अद्‌भुत आनन्द प्राप्त हो, और नेत्र जहांसे हटते भी न हो ऐसे जिनेश्वर भग- वान हैं, सो निश्चय करके मैं ही हूं इस प्रकारकी तन्मयतावाला ध्यानी पुरुष सर्वज्ञकी कोटीमें आ जाता है।

श्रीवीतराग भगवन्तका ध्यान करने से कर्मोंका क्षय होता है, और जब सारे कर्मक्षय हो जाते हैं तब ध्यान करनेवाला पुरुष भी वीतराग बन जाता है। जो मनुष्य रागीका आलम्बन लेगा रागी बनेगा। जो वीतरागका आलम्बन लेगा वीतराग बनेगा। क्योंकि यंत्रवाहक जिस जिस भावसे तन्मय होता है, उसके साथ आत्मा विश्वरूप मणिकी तरह तन्मयता पाता है। और यह उदाहरण स्पष्ट है, जैसे कि, स्फ- टिक मणिके पास जैसा रङ्ग होगा वैसाही दीखता रहेगा, अतः सफेद काचके तुल्य हृदयको बनाकर रुपस्थ ध्यान किया जाय तो आनन्दकी सीमा न रहेगी। जो मनुष्य ध्यानके अभ्यासी हैं, उनके लिए यह

ध्यान मुश्किल बात नही है। जिन महानुभावको अनन्त सुखकी अभिलाषा है उन्हें यह ध्यान अवश्य करना चाहिए।

रूपातीत ध्येय स्वरूप

यह तो अलौकिक ध्यान है, अमूर्त, सचिदानन्द स्वरुप निरञ्जन सिद्ध परमात्माका ध्यान जो निराकार, रुपरहित जिसको रुपातीत कहते हैं।

रुपातीत ध्यान बहुत उच्च कोटिका हैं। जो पुरुष सिद्ध (स्वरुप) भगवानका आलम्बन लेकर इस ध्यानको करते हैं, उनको योगी ग्राह्य, ग्राहक भावरहित तन्मयता प्राप्त होती है। और अनन्य शरणी होकर तन्मय हो लयलीन हो जाते हैं, जिससे ध्यानी और ध्यानके अभावसे ध्येयके साथ एकरुपता प्राप्त कर लेते हैं। जो पुरुष इस तरह एकरुपतामें लीन हो जाते हैं उसीको समरसीभाव कहते हैं। जिसको एकीकरण, अभेदपन, माना है। इस तरहसे जो आत्मा अभिन्नतासे परमात्माके विषे लयलीन होता है उसीके कार्यके सिद्धि होती है।

लक्ष्य ध्यानके सम्बन्धसे अलक्ष्य ध्यान करना, स्थूल ध्यानसे सूक्ष्म ध्यानका चिन्तवन करना, सालम्बनसे निरालम्बन होना इस प्रकार अभ्यास करनेसे तत्त्वज्ञ योगी शीघ्र ही तत्त्व प्राप्त कर लेते हैं।

उपरोक्त कथनानुसार चार तरहके ध्यानामृतमें मग्न होनेवाले योगीका मन जगत्के तत्त्वोंको साक्षात करके आत्माकी शुद्धि कर लेता है।

धर्म ध्यान प्रकरण

आज्ञा, अपाय, विपाक, और संस्थानका चिन्तवन करनेसे ध्येयके भेद सहित धर्म ध्यानके चार प्रकार बताए गए जिनका संक्षेप वर्णन इस प्रकार है।

(१) आज्ञा विचय ध्यान उसको कहते हैं कि सर्वज्ञ भगवानकी अबाधित आज्ञा समक्ष रख कर तत्त्व बुद्धिसे अर्थ चिन्तवन करना, मनन करना, और तदनुसार वर्तन करना। जिनेश्वर भगवानके वचन सूक्ष्म हैं, जो किसीभी प्रकारकी युक्तिसे या हेतुसे खण्डित नहीं हो सकते। जिन भगवानके वचन सर्वदा सत्य होते हैं इस लिए गृहण करने योग्य हैं, और

ऐसे वचन जो गृहण करते हैं वह आज्ञारुप ध्यानकी कोटिमें गिने जाते हैं।

(२) अपाय विचय ध्यान, उसको कहते हैं कि ध्यानके प्रतापसे राग, द्वेष, कषायादिसे उत्पन्न होनेवाले दुखोंका चिन्तवन होकर दुर्गतिसे भय प्राप्त होता हो तो ऐसे पुरुष इस लोक परलोक सम्बन्धी पापोंका त्याग करनेमें तत्पर होते हैं, और अनिष्ट कार्योंसे निवृत्ति पाकर सन्मार्गमें चलते हैं जिससे कर्मबन्ध नही होता।

(३) विपाक विचय ध्यान, से क्षण क्षणमें उत्पन्न होनेवाले कर्मफलके उदयका अनेक रुपसे विचार किया जाय, और कर्मसमूहसे अलग होनेकी भावना भायी जाय, और निश्चय पूर्वक यह मानता रहे कि अरिहन्त भगवानको जो सम्पदाएँ सम्प्राप्त हैं, और नर्कके जीवोंको जो विपदाएँ प्राप्त हैं। उसमें पुण्य और पापका ही साम्राज्य है।

(४) सस्थान विचय ध्यानका यह साराश है कि जिसमें उत्पत्ति, स्थिति, और नाश स्वरुपवाले अनादि अनन्त लोककी आकृतिका चिन्तवन होता हो, और

विविध द्रव्यान्तरगत अनन्त पर्यायका परिवर्तन होनेसे नित्य आसक्त होनेवाला मन रागद्वेषादि मोहजन्य प्रवृत्तिकी तर्फ आकुलताको प्राप्त नही करता हो, इस प्रकारसे चारों भेदका वर्णन समझले तो कल्याण हो जाता है।

विधि-विधान प्रकरण

जैन सिद्धान्तमें मंत्रशास्त्र-जप जापका वर्णन विशेष रूपसे किया है, लेकिन वर्तमान जैन समाजमें से बहुतसी व्यक्तिका लक्ष विधि-विधानकी तरफ तो कम हो गया है, और कार्य सिद्धिकी तरफ विशेष बढ गया हो ऐसा मेरा अनुमान है, लेकिन विधि सहित आराधना न की जाय तो मन्त्र सिद्धि नही होती।

हर एक मंत्र साध्य करनेसे पहले शुभ महिना शुभ पक्ष पञ्चमी, दशमी, पूर्णिमादि पूर्णा तिथि चन्द्र-बल सिद्धियोग, अमृत सिद्धियोग, राजयोग, रवि-योग, आनन्दयोग, श्रीवत्सयोग, छत्रयोग आदि श्रेष्ठ देखकर बलवान नक्षत्र और लाभदाई चौघडियेमें

निजका सुर्यस्वर चलता हो तब मन्त्रके साधनमें प्रवेश करना चाहिए।

साध्य करनेके लिए देवस्थान, या बाग, जलाशयके समीप अथवा और कोई शुद्ध स्थान जो उपरकी मजील पर न हो भूमितल या जमीन पर बैठ कर ध्यान करनेकी व्यवस्था करना चाहिए। मन्त्र जिस प्रकारका हो वैसाही आलम्बन सामने स्थापन करे, अष्टद्रव्य शुद्ध काममें लेवे, दीपक जयणा सहित रखे, आलम्बनके दाहिनी ओर दीपक और बाई ओर धूप रखना चाहिए, दीपककी ज्योति आलम्बनके नेत्र तक ऊंची रह सके इस तरहसे दीपक रखना।

द्रव्यकी इच्छावालेको पूर्व दिशाकी तरफ मुख करके बैठना चाहिए। सफेद कपडे सफेद आसन सफेद माला काममें लेवे, और ऐहिक सुखमें भी यही विधान उपयोगी होगा।

कष्ट निवारण–सङ्कट दूर करनेके लिए उत्तर दिशा आसन, कपडे और माला लाल रंगकी लेना। अन्य क्रूर कार्यमें दक्षिण दिशा नीले व काले व आस-

मानी रंगके कपडे, आसन और माला लेवे। किसी कार्यमें पश्चिम दिशा व कपडे आसन माला पीले रंगकी लेना बताया है।

संकल्प करके जाप करे और पूरे होने पर किसी उत्तम पुरुषकी साक्षीमें उत्तर क्रिया याने सिद्धि करना चाहिए। सिद्धि क्रियाके अलग अलग विधान हैं क्रिया करानेवाला पुरुष योग्यता रखता हो उस प्रकार सिद्धि क्रिया करावे। सिद्धि क्रियामें षोडांश जाप तो अवश्य करे, समय अर्द्धरात्रिका, पिछली रात्रिका और प्रतिष्ठा आदिमें तो जो भी समय मिले उत्तम माना गया है। सिद्धि क्रियाके बाद इक्कीस जाप तो नित्य करना चाहिए, और विशेष कार्य हो तब अधिक जाप करके कार्य सिद्ध करे, साथ ही ध्यान रखे कि क्रिया शुद्ध है तो कार्य भी सिद्ध है। इस प्रकार संक्षेपसे विधान बताया गया है अधिक जाननेकी इच्छावालोंको गुरुगमसे जानना चाहिए। यही अंतिम निवेदन है।

सम्पूर्ण

मत्रसूची

